Postal Reg. No.GDP45/2023-2025

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 10
अंक - 48
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

05 जमादिउल सानी, 1446-47 हिज्री कमरी, 27 नुबुव्वत 1404 हिज्री शम्सी, 27 नवम्बर 2025 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

فَاجۡتَنِبُوا الرِّجۡسَ
مِنَ الۡاَوۡثَانِ وَاجۡتَنِبُوۡا
قَوۡلَ الزُّوۡرِ ○

(सूरः आलेइमरान: 6)

अनुवाद: निश्चय ही मूर्तियों की गन्दगी (अशुद्धता) से बचो।

और झूठ बोलने से दूर रहो।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

सच्चाई तुम्हें भलाई की ओर ले जाती है,और भलाई जन्नत की ओर ले जाती है

عَنِ ابۡنِ مَسۡعُوۡدٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ قَالَ: اِنَّ الصِّدۡقَ یَھۡدِیۡ اِلَی الۡبِرِّ ۔ وَاِنَّ الۡبِرَّ یَھۡدِیۡ اِلَی الۡجَنَّۃِ، وَاِنَّ الرَّجُلَ لَیَصۡدُقُ حَتّٰی یُکۡتَبَ عِنۡدَ اللّٰہِ صِدِّیۡقًا ۔ وَاِنَّ الۡکَذِبَ یَھۡدِیۡ اِلَی الۡفُجُوۡرِ، وَاِنَّ الۡفُجُوۡرَ یَھۡدِیۡ اِلَی النَّارِ، وَاِنَّ الرَّجُلَ لَیَکۡذِبُ حَتّٰی یُکۡتَبَ عِنۡدَ اللّٰہِ کَذَّابًا ۔

हज़रत इब्न मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णन है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: सच्चाई भलाई की ओर ले जाती है और भलाई जन्नत की ओर ले जाती है। और जो व्यक्ति सदैव सच बोलता है, अल्लाह तआला के यहाँ वह 'सिद्दीक' (अत्यधिक सत्यवादी) लिखा जाता है। और झूठ पाप और दुराचार की ओर ले जाता है, और दुराचार नरक की ओर ले जाता है। और जो व्यक्ति सदैव झूठ बोलता है, वह अल्लाह तआला के यहाँ 'कज़्ज़ाब' (अत्यधिक झूठा) लिखा जाता है।

(सहीह बुख़ारी, किताब अल-अदब, अध्याय: अल्लाह का कथन "अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों के साथ रहो")

عَنِ الۡحَسَنِ بۡنِ عَلِیٍّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا قَالَ حَفِظۡتُ مِنۡ رَسُوۡلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ، دَعۡ مَا یُرِیۡبُکَ اِلٰی مَا لَا یُرِیۡبُکَ، فَاِنَّ الصِّدۡقَ طُمَانِیۡنَۃٌ وَالۡکَذِبَ رِیۡبَۃٌ ۔

हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णन है कि उन्होंने कहा: मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से यह बात याद रखी: "जो बात तुम्हें संदेह में डालती हो, उसे छोड़कर उस चीज़ की ओर बढ़ो जो तुम्हें संदेह में नहीं डालती। निश्चय ही सच्चाई मन की शांति है और झूठ संदेह व अशांति है।"

हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मुझे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यह कथन अच्छी तरह याद है कि "संदेह पैदा करने वाली बातों को छोड़ दो और संदेह से मुक्त निश्चयात्मक बात को अपनाओ। क्योंकि विश्वास दिलाने वाली सच्चाई मन की शांति का कारण है और झूठ बेचैनी और परेशानी का कारण बनता है।"

(सहीह बुख़ारी, किताब अल-बुयू, अध्याय: संदिग्ध मामलों की व्याख्या; सुनन तिर्मिज़ी, अध्याय: क़यामत के दृश्य)(संदर्भ: "हदीक़तुस सालेहीन", लेखक: मलिक सैफुर्रहमान साहिब, हदीस संख्या 698 ,697)

★ ★ ★

मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि अंततः सच्चाई ही विजयी होती है निश्चित रूप से याद रखो, झूठ जैसी कोई अशुभ चीज़ नहीं है

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

कुरआन शरीफ ने झूठ को एक गंदगी और अशुद्धि बताया है, जैसा कि उसने फ़रमाया है :

فَاجۡتَنِبُوا الرِّجۡسَ مِنَ الۡاَوۡثَانِ وَاجۡتَنِبُوۡا قَوۡلَ الزُّوۡرِ " देखो, यहाँ झूठ को मूर्ति के समकक्ष रखा गया है और वास्तव में झूठ भी एक मूर्ति (बुत) ही है, वरना सच्चाई को छोड़कर दूसरी राह क्यों अपनाई जाए? जैसे मूर्ति के पीछे कोई सच्चाई नहीं होती, वैसे ही झूठ के पीछे दिखावे के अलावा और कुछ नहीं होता। झूठ बोलने वालों की विश्वसनीयता इतनी कम हो जाती है कि यदि वे सच भी बोलें तो भी यही ख्याल रहता है कि कहीं इसमें भी झूठ की मिलावट तो नहीं है। यदि झूठ बोलने वाले चाहें कि उनकी झूठ बोलने की आदत कम हो जाए, तो वह जल्दी दूर नहीं होती। उन्हें लंबे समय तक अभ्यास करना पड़ता है, तब जाकर उन्हें सच बोलने की आदत पड़ती है।

(अल्-हकम, खंड 6, अंक 31, तारीख़ 31 अगस्त 1902, पृष्ठ 2)

मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि अंततः सच्चाई ही सफल होती है। भलाई और जीत उसी की है... निश्चित रूप से याद रखो, झूठ जैसी कोई अशुभ चीज़ नहीं है। आम तौर पर दुनियादार लोग कहते हैं कि सच बोलने वाले पकड़े जाते हैं, लेकिन मैं इसे कैसे मानूँ? मेरे ऊपर सात मुकदमे हुए हैं और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से किसी एक में भी मुझे एक शब्द भी झूठ लिखने की ज़रूरत नहीं पड़ी। कोई बताए कि क्या किसी एक मामले में भी अल्लाह तआला ने मुझे हराया है? अल्लाह तआला तो स्वयं सच्चाई का समर्थक और सहायक है। क्या यह संभव है कि वह सच्चे इंसान को सज़ा दे? यदि ऐसा हो तो फिर दुनिया में कोई भी व्यक्ति सच बोलने का साहस न करे और अल्लाह तआला पर से विश्वास ही उठ जाए। सच्चे लोग तो जीते-जी मर जाएँ। असल बात यह है कि सच बोलने से जो सज़ा मिलती है, वह सच के कारण नहीं होती। वह सज़ा उनकी कुछ अन्य छिपी हुई बुराइयों के कारण होती है और किसी दूसरे झूठ की सज़ा होती है। अल्लाह तआला के पास उनकी बुराइयों और शरारतों की एक लंबी सूची होती है। उनकी बहुत सी गलतियाँ होती हैं और वे किसी न किसी गलती में सज़ा पा ही लेते हैं।

(अल-हकम, खंड 10, अंक 17, तारीख़ 17 मई 1906, पृष्ठ 4-5)

★ ★ ★

एकेश्वरवाद के बाद सबसे बड़ी भलाई सच्चाई है। यह मानवीय चरित्र का एक मूलभूत हिस्सा है झूठ प्रकृति के विरुद्ध है

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरा अल-फुरकान की आयत नंबर 73 " وَالَّذِیۡنَ لَا یَشۡھَدُوۡنَ الزُّوۡرَ ۙ وَاِذَا مَرُّوۡا بِاللَّغۡوِ مَرُّوۡا کِرَامًا ○

और जो लोग झूठी गवाही नहीं देते और जब व्यर्थ बातों के पास से गुजरते हैं, तो गरिमा के साथ गुजर जाते हैं" की व्याख्या में फ़रमाते हैं:

वास्तविकता यह है कि एकेश्वरवाद के बाद सबसे बड़ी भलाई और सबसे कठिन काम जो इस दुनिया में इंसान के सामने आता है, वह सच्चाई ही है। हजारों ऐसे इंसान देखे जाते हैं जो दयालु भी होते हैं, न्याय करने वाले भी होते हैं, लेकिन जब उन्हें गवाही देनी पड़ती है और वे देखते हैं कि उसके नतीजे में उनकी अपनी जान या उनके किसी रिश्तेदार या दोस्त को नुकसान पहुँचेगा, तो वे उसमें कुछ न कुछ परिवर्तन अवश्य कर देते हैं। और यह बीमारी इतनी फैल गई है कि हमारे देश में लोग बड़ी बेबाकी के साथ कसमें खा-खा कर झूठ बोलते हैं और साथ ही इस बात पर नाराज़ भी होते हैं कि उनके झूठ को सच क्यों नहीं माना जाता।

संक्षेप में, सच्चाई अत्यधिक महत्व रखने वाली चीज़ है। नबी करीमों ने इस पर विशेष जोर दिया है और यह मानवीय चरित्र का एक मूलभूत अंग है। लेकिन आजकल राजनीतिक और राष्ट्रीय हितों के लिए झूठ को झूठ ही नहीं समझा जाता,

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया:

اَلَا تَرْضٰى اَنْ تَكُوْنَ مِنِّيْ بِمَنْزِلَةِ هَارُوْنَ مِنْ مُوْسٰى اِلَّا اَنَّهٗ لَيْسَ نَبِيٌّ بَعْدِيْ

(यानी) "हे अली! क्या तुम इस बात से खुश नहीं हो कि तुम मेरे लिए वैसे ही हो जैसे हारून, मूसा के लिए थे, केवल इस अंतर के साथ कि तुम मेरे बाद नबी करीम नहीं हो।"

यह मूलभूत सिद्धांत याद रखना चाहिए कि यदि व्यवस्था के विरुद्ध कोई बात हो तो फिर सख्ती भी की जाती है, वहाँ नरमी का सवाल ही नहीं उठता।

"अल्लाह की कसम! यदि मैं कोई ऐसी कसम खा बैठूँ और फिर उसके अलावा किसी दूसरी बात को बेहतर समझूँ, तो इन्-शाअ-ल्लाह मैं अवश्य वही बात करूँगा जो बेहतर होगी और उस कसम का प्रायश्चित कर दूँगा।" (हदीस)

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तबूक की लड़ाई में सबसे बड़ा झंडा हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को प्रदान किया। इसके अलावा हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अन्हु या कुछ वर्णनों के अनुसार हज़रत हुबाब बिन मुन्ज़िर रज़ियल्लाहु अन्हु को भी झंडे प्रदान किए गए।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम युद्ध की तैयारी के लिए हर तरह के बाहरी साधन करने के बाद प्रार्थना की ओर मुड़े। और तैयारी के आरंभ से लेकर तबूक की ओर प्रस्थान तक यह प्रार्थना करते रहे:

"हे अल्लाह! यदि यह छोटा-सा समूह नष्ट हो गया तो धरती पर तेरी उपासना करने वाला कोई नहीं रहेगा।"

अद्भुत संयोग है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सबसे पहले युद्ध (बद्र की लड़ाई) के अवसर पर भी इस प्रार्थना का उल्लेख मिलता है और आपके इस अंतिम युद्ध के अवसर पर भी इस प्रार्थना का उल्लेख मिलता है।

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तबूक के लिए गुरुवार के दिन निकले और आप गुरुवार के दिन यात्रा करना पसंद करते थे।

तबूक के घटनाक्रम की रोशनी में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र जीवन का वर्णन।

माननीय गुलाम मुहिउद्दीन सुलेमान साहिब, मुरब्बी सिलसिला, इंडोनेशिया; माननीय डॉक्टर मुहम्मद शफ़ीक सहगल साहिब, उप वकीलुत तस्नीफ, तहरीक-ए-जदीद, रब्वाह; और माननीया बशीरा परवेज़ मन्हास साहिबा का स्मरण और उनकी अनुपस्थिति में नमाज-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 24 अक्टूबर 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज भी मैं तबूक की घटनाओं के और विवरण प्रस्तुत करूँगा। एक व्यक्ति जद बिन क़ैस का वर्णन हुआ है। यह भी कपटाचारियों में से एक व्यक्ति था जो अब्दुल्लाह बिन उबई के बाद कपटाचारियों का एक दूसरा बड़ा नेता था। वह अब्दुल्लाह बिन उबई के साथ मिलकर विभिन्न साजिशों में लगा रहता था। यह वही था जिसने हुदैबिया की संधि के अवसर पर भी बैयत (वफादारी की शपथ) नहीं की थी। उसने भी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित होकर युद्ध पर न जाने का बहाना पेश किया, लेकिन यह बहाना भी एक विचित्र और निरर्थक किस्म का बहाना था। इसलिए लिखा है कि तबूक की लड़ाई के अवसर पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जद बिन क़ैस से, जो बनू सलिमा का सरदार था, पूछा: "हे जद! क्या तुम इस साल बनू अस्फ़र (रोमन लोगों) के विरुद्ध जिहाद में चलोगे?" उसने कहा: "हे अल्लाह के रसूल! मुझे छूट दे दीजिए और मुझे परीक्षा में न डालिए। अल्लाह की कसम! मेरी कौम मेरे बारे में अच्छी तरह जानती है कि मुझसे अधिक स्त्रियों को चाहने वाला कोई व्यक्ति नहीं है और मुझे डर है कि यदि मैंने बनू अस्फ़र (रोमनों) की स्त्रियों को देख लिया तो मैं सहन नहीं कर पाऊँगा।" अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह निरर्थक जवाब सुनकर उससे मुँह मोड़ लिया और फ़रमाया: "ठीक है, मत जाओ। तुम्हें अनुमति है। तुम्हारे जाने की कोई ज़रूरत नहीं है।" उसके बेटे हज़रत अब्दुल्लाह बिन जद रज़ियल्लाहु अन्हु, जो बद्र में शामिल होने वाले सहाबी थे और बहुत ईमानदार थे, अपने पिता के पास आए और उससे कहा: "तुमने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आह्वान को क्यों ठुकराया? अल्लाह की कसम! बनू सलिमा में तुझसे अधिक धनवान कोई नहीं है। न तो तुम स्वयं निकल रहे हो और न किसी को (घोड़े आदि पर) सवार कर रहे हो।" यानी किसी योद्धा की सवारी आदि का प्रबंध भी नहीं कर रहे। उसने कहा: "हे मेरे बेटे! मुझे क्या हो गया है कि मैं गर्मी और इस कठिनाई के समय में बनू अस्फ़र की ओर चलूँ? मेरे बेटे! मैं अपने घर और अपने इलाके में रहते हुए भी रोमनों के भय से काँपता हूँ।" उसने अपने बेटे को यह जवाब दिया। तो ऐसे लोगों से लड़ने के लिए मैं उनके इलाके में कैसे जा सकता हूँ? मैं तो घर बैठे ही भयभीत हूँ। हे बेटे! अल्लाह की कसम! मैं बहुत बुद्धिमान और अनुभवी हूँ। मुझे युद्धों की बहुत अच्छी जानकारी है।" यानी वह यह कह रहा था कि महाशक्ति रोम से युद्ध करना कोई बुद्धिमानी की बात नहीं है। यह सारी बात सुनकर उसका ईमानदार बेटा नाराज हो गया और कहने लगा: "नहीं, अल्लाह की कसम! यह कपटाचार है जिसकी वजह से तुम युद्ध पर नहीं जा रहे और अल्लाह की कसम, तुम्हारे बारे में अल्लाह के रसूल पर अवश्य कुरआन उतरेगा।" कहा जाता है कि उनके पिता ने अपना जूता उठाया और उनके मुँह पर मारा। उसका बेटा वापस चला गया और उससे कोई बात नहीं की।

एक वर्णन में है कि जद बिन क़ैस के बारे में यह आयत उतरी: "और उनमें से वह भी है जो कहता है कि मुझे छूट दो और मुझे परीक्षा में न डालो।"

(सूरा अत-तौबा: 49)

कहा जाता है कि बाद के समय में उसने पश्चाताप कर लिया था और अच्छा पश्चाताप किया था और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के खिलाफत के काल में उसकी मृत्यु हुई।

(अस-सीरतुन नब्विय्या लि-इब्ने हिशाम, पृष्ठ 815, दारुल कुतुब इल्मिया, 2001 ई.; शरहुल अल्लामा अज़-ज़र्कानी अला अल-मवाहिबिल लदुन्निया, खंड 4, पृष्ठ 72, दारुल कुतुब इल्मिया, 1996 ई.; अल-लौलौल मकनून, सीरत विश्वकोश, खंड 9, पृष्ठ 463-465, दारुस्सलाम; तारीखुत तबरी, खंड 2, पृष्ठ 181-182, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत, 2012 ई.; उसदुल ग़ाबा, खंड 1, पृष्ठ 521, दारुल कुतुब इल्मिया, 2003 ई.)

बाद में यह कपटाचार नहीं रहा, बल्कि वह पक्का मुसलमान हो गया। जो साजिश करने वाले लोग थे, वे वहाँ एक जगह इकट्ठे होकर इस युद्ध के संदर्भ में साजिशें भी किया करते थे। इसका विवरण पहले भी बयान हुआ है, यानी उन्होंने अपना एक केंद्र बना रखा था। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस केंद्र को समाप्त करने का आदेश दिया। इसके विवरण में लिखा है कि मदीना में कपटाचारी और यहूदी इन साजिशों में लगे हुए थे, यानी झूठी अफवाहें फैलाकर मुसलमानों का हौसला पस्त करने की कोशिश और मुसलमानों को युद्ध पर जाने से रोकने की भरपूर कोशिश, और इसके लिए वह तरह-तरह के हथकंडे अपनाते थे। ईमानदार और दृढ़ विश्वास वाले मोमिन कपटाचारियों के इस घृणित चरित्र से न केवल परिचित थे, बल्कि उन पर नजर रखे हुए थे और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में इन लोगों की रिपोर्टें पहुँच रही थीं। हालाँकि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी दया और करुणा के कारण इन लोगों को क्षमा कर देते थे, लेकिन जब व्यवस्था के विरुद्ध कोई खतरनाक साजिश होती थी तो उसे बड़ी बुद्धिमत्ता के साथ, किंतु सख्ती से समाप्त करने के लिए कार्रवाई भी की जाती थी।

यह मूलभूत सिद्धांत याद रखना चाहिए कि यदि व्यवस्था के विरुद्ध कोई बात हो तो फिर सख्ती भी की जाती है, वहाँ नरमी का सवाल ही नहीं उठता।

चुनाँचे, इसी तरह की एक कार्रवाई इस अवसर पर भी की गई। एक वर्णन में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को खबर मिली कि कपटाचारी यहूदी सुवैलिम के घर में इकट्ठे हो रहे हैं, जिसका घर जासुम के पास है। जासुम मदीना में एक कुआँ था, उसे बीर जासिम भी कहते हैं। और ये कपटाचारी लोगों को तबूक की लड़ाई में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ जाने से रोक रहे हैं। दरअसल, मदीना में मुसलमानों को इस युद्ध पर न जाने के लिए हर तरह के नकारात्मक प्रचार की सारी साजिशें यहीं तैयार की जाती थीं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु को कुछ लोगों के साथ उसकी ओर भेजा और आदेश दिया कि सुवैलिम के घर में आग लगा दी जाए, यानी उसे नष्ट कर दो, गिरा दो, जला दो। (उस समय) कच्चे घर होते थे। हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु ने ऐसा ही किया, जिस पर उस जगह मौजूद सभी लोग भाग गए। इन भागने वालों में से एक ज़ह्हाक बिन खलीफा भी था जो कपटाचारियों के साथ मिला हुआ था। वह घर की छत पर चढ़ गया और उसकी पिछली ओर से नीचे कूद गया, जिसके कारण उसकी टाँग और कलाई टूट गई। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दया और आपकी क्षमाशीलता फिर भी इतनी प्रबल रही कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनमें से किसी को भी गिरफ्तार न करने का आदेश दिया और न ही कोई और सजा दी। हाँ, साजिशों के इस अड्डे यानी मुख्यालय को नष्ट कर दिया गया।

(शरहुल अल्लामा अज़-ज़र्कानी अला अल-मवाहिबिल लदुन्निया, खंड 4, पृष्ठ 72, दारुल कुतुब इल्मिया, 1996 ई.; अस-सीरतुन नब्विय्या लि-इब्ने हिशाम, पृष्ठ 816, दारुल कुतुब इल्मिया, 2001 ई.; अल-लौलौल मकनून, सीरत विश्वकोश, खंड 9, पृष्ठ 467, दारुस्सलाम)(फ़रहंगे सीरत, पृष्ठ 84, ज़वार एकेडमी पब्लिकेशन्स, कराची, 2003 ई.)

तबूक की यात्रा के लिए हर कोई तैयारी में लगा हुआ था। आर्थिक त्याग की श्रृंखला भी जारी थी ताकि यात्रा के खर्च का प्रबंध हो सके।

गरीब और निर्धन सहाबी नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित होते थे तो तैयारी के लिए उनकी सहायता की जाती। इसी तरह, संपन्न लोग उन सहाबियों को भी सवारियाँ आदि मुहैया करा रहे थे जिनके पास सवारी नहीं थी, क्योंकि सवारी के बिना यह यात्रा संभव भी नहीं थी और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का भी आदेश था कि हमारे साथ वही व्यक्ति जाए जो ताकतवर हो और यात्रा की कठिनाई सहन कर सकता हो और उसे सवारी और रास्ते का सामान उपलब्ध हो।

इस अवसर पर कुछ सहाबी रोते हुए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए। उन्होंने आपसे सवारी की प्रार्थना की और वे उसके मुहताज थे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "मेरे पास अब कुछ नहीं है जिस पर मैं तुम्हें सवार कर सकूँ।" इस पर वे रोते हुए वापस लौट गए। इन सहाबियों की ईमानदारी, निष्ठा और असहायता की इस दशा का वर्णन अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुरआन में इस तरह किया है: "और उन लोगों पर कोई दोष नहीं है जो तुम्हारे पास उस समय आए जब युद्ध की घोषणा की गई थी, इसलिए कि तुम उन्हें कोई सवारी मुहैया करा दो। तो तुमने जवाब दिया कि मेरे पास कोईचीज़ नहीं है जिस पर मैं तुम्हें सवार कराऊँ और यह जवाब सुनकर वे चले गए और इस दुख से कि अफसोस! उनके पास कुछ नहीं है जिसे अल्लाह के मार्ग में खर्च कर सकें, उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे।" (सूरा अत-तौबा: 92) यह सूरा तौबा की आयत है।

इस वंचना के कारण उनके अत्यधिक रोने की वजह से इतिहास और जीवनी की पुस्तकों में उन्हें "बक्काऊँ" (बहुत अधिक रोने वाले) के नाम से याद किया जाता है। उनकी संख्या के बारे में मतभेद है। कुछ पुस्तकों में तो लगभग अठारह नाम मिलते हैं, हालाँकि अधिकांश में सात नामों पर सहमति है। इनमें शामिल थे: सालिम बिन उमैर, उल्बा बिन ज़ैद, अबू लैला अब्दुर्रहमान बिन कअब, अम्र बिन हुमाम, अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल मुज़नी, हरमी बिन अब्दुल्लाह और इरबाज़ बिन सारिया। एक वर्णन में है कि हज़रत यामीन बिन उमैर बिन कअब नज़री की हज़रत अबू लैला अब्दुर्रहमान बिन कअब और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल रज़ियल्लाहु अन्हु से रास्ते में मुलाकात हुई। ये दोनों रो रहे थे। उन्होंने इन दोनों से पूछा: "क्यों रो रहे हो?" उन्होंने कहा कि "हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास गए थे कि आप हमें सवारी प्रदान करें, मगर वहाँ भी हमें कोई सवारी नहीं मिली और स्वयं हमारे पास इतना धन-दौलत उपलब्ध नहीं है कि सवारी का प्रबंध कर सकें और आपके साथ जिहाद के लिए जा सकें।" इस पर उन्होंने उन्हें पानी ढोने वाला एक ऊँट दिया। इन दोनों ने उस पर कजावा (सवारी का काठी जैसा सामान) रखा। इसके अलावा उन्होंने रास्ते के लिए कुछ खजूरें भी उन्हें दीं और इस तरह ये दोनों अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ जिहाद के लिए रवाना हुए। इस तरह उनका प्रबंध हुआ। इसी तरह हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु को पता चला तो उन्होंने भी दो सहाबियों को सवारी और रास्ते का सामान मुहैया करा दिया और शेष तीन को हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने सवारी और रास्ते का सामान दे दिया। इस प्रकार ये सातों नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ रवाना हुए।

(अस-सीरतुन नब्विय्या लि-इब्ने हिशाम, पृष्ठ 816, दारुल कुतुब इल्मिया, 2001 ई.; इनारतुद्दुजा फी मग़ाज़ी खैरिल वरा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, पृष्ठ 721, दारुल मिन्हाज, 2006 ई.; शरहुल अल्लामा अज़-ज़र्कानी अला अल-मवाहिबिल लदुन्निया, खंड 4, पृष्ठ 74-75, दारुल कुतुब इल्मिया, 1996 ई.; तारीखुत तबरी, खंड 2, पृष्ठ 182, दारुल कुतुब इल्मिया, 1987 ई.)(अल-लौलौल मकनून, सीरत विश्वकोश, खंड 9, पृष्ठ 469, दारुस्सलाम)

इसी तरह, हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु के कबीले के लोगों ने भी नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में सवारी के लिए प्रार्थना की। ये भी छह लोग थे। उन्होंने हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु को अपना प्रतिनिधि बनाकर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में भेजा। उन्हें भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यही फ़रमाया कि मेरे पास कुछ भी नहीं है जो मैं तुम लोगों को दे सकूँ। सहीह बुखारी के वर्णन में है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कसम खाकर कहा कि मेरे पास कुछ भी नहीं है कि मैं दे सकूँ। इस पर वे लोग रोते हुए वहाँ से वापस हो गए, लेकिन इसी दौरान आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत सअद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु से ऊँट खरीदे और हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलवाया और फ़रमाया: "यह ऊँट ले जाओ और स्वयं और अपने साथियों को दे दो।" इस घटना का विवरण हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने स्वयं बयान फ़रमाया। चुनाँचे, बुखारी में है कि हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि कुछ अशअरी लोगों के साथ मैं नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सवारी माँगूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह की कसम! मैं तुम्हें सवारी नहीं दूँगा और मेरे पास सवारी के जानवर नहीं हैं कि तुम्हें सवार होने के लिए दूँ।" इतने में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास युद्ध की लूट के ऊँट लाए गए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमारे बारे में पूछताछ की। फ़रमाया: "वे अशअरी लोग कहाँ हैं?" और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पाँच ऊँट, जो सफेद कूबड़ वाले थे, हमें देने का आदेश दिया। जब हम चले गए तो हमने कहा कि जो हमने किया है, वह हमारे लिए कभी शुभ नहीं होगा। हम यह सोचकर आपके पास वापस गए और हमने कहा: "आपसे हमने प्रार्थना की थी कि हमें सवारी दें और आपने कसम खाई कि आप हमें सवारी नहीं देंगे। क्या आप भूल गए हैं

कि आपने कसम खाई थी कि तुम्हें सवारी नहीं दूँगा?" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "मैंने तुम्हें सवारी नहीं दी, बल्कि अल्लाह ही ने तुम्हें सवारी दी है। और मैं तो, अल्लाह की कसम! यदि कोई ऐसी कसम खा बैठूँ और फिर उसके अलावा किसी दूसरी बात को बेहतर समझूँ तो इंशाअल्लाह अवश्य वही बात करूँगा जो बेहतर होगी और उस कसम का प्रायश्चित कर दूँगा।"

"यह कसम मैंने खाई थी, लेकिन बाद में प्रबंध हो गया तो अल्लाह तआला ने प्रबंध किया है। और यदि मुझे शक भी हो कि मैंने ऐसी कसम खाई है लेकिन उसके मुकाबले में कोई बेहतर बात सामने आती है तो मैं वह कसम समाप्त कर देता हूँ और उसका प्रायश्चित कर देता हूँ।"

एक दूसरे वर्णन में है, और यह हज़रत अबू मूसा अशअरी से वर्णन है, कि उन्होंने कहा: "मेरे साथियों ने मुझे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास भेजा कि मैं आपसे उनके लिए सवारियाँ माँगूँ, क्योंकि वे भी आपके साथ 'जैशे उस्रह' (कठिनाई वाली सेना) में हैं और यही तबूक का युद्ध है। मैंने कहा: 'हे अल्लाह के नबी करीम! मेरे साथियों ने मुझे आपके पास भेजा है कि आप उन्हें सवारियाँ दें।' आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: 'अल्लाह की कसम! कोई सवारी नहीं है कि तुम्हें दूँ।' और मैंने संयोगवश आपसे ऐसे समय में माँग की जब आप थोड़े नाराज थे और मैं नहीं जानता था। मैं नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस इन्कार से और इस डर से कि कहीं नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने मन में मुझ पर नाराज न हो गए हों, दुखी होकर लौट आया। मैं अपने साथियों के पास वापस आ गया और जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था, मैंने उन्हें बताया। बहुत थोड़ी देर बीती थी कि मैंने बिलाल को सुना कि वह 'अब्दुल्लाह बिन क़ैस' को पुकार रहे थे। मैंने उन्हें जवाब दिया। उन्होंने कहा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास जाओ, तुम्हें बुला रहे हैं।" (उस समय) घोषणा करने, बुलाने का यही तरीका था। लाउडस्पीकर तो थे नहीं, इसी तरह घोषणा की जाती थी। "जब मैं आपके पास आया तो आपने फ़रमाया कि यह ऊँटों के जोड़े ले लो।" और ये जोड़े, यानी छह ऊँट, आपने हज़रत सअद से उसी समय खरीदे थे। फ़रमाया: "जाओ, इन्हें अपने साथियों के पास ले जाओ और उनसे कहो कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तुम्हें यह सवार होने के लिए देते हैं और इस पर सवार हो जाओ।" चुनाँचे, मैं वह ऊँट लेकर उनके पास चला गया। मैंने कहा: "नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यह ऊँट तुम्हें सवारी के लिए देते हैं, मगर मैं अल्लाह की कसम, तुम्हें सवार होने नहीं दूँगा, जब तक कि तुम में से कोई मेरे साथ उस व्यक्ति के पास न जाए जिसने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से वह बात सुनी थी। यह न समझो कि मैंने स्वयं तुमसे कोई बात बयान की थी जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नहीं फरमाई थी।" वे कहने लगे: "हम तो आपको अपने निकट सच्चा मानते हैं।" चूँकि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पहले इन्कार किया था न? तो उन्होंने कहा और बहुत सतर्क थे कि कहीं यह न समझो कि पहली बार में मैंने तुम्हें अपनी ओर से बात कर दी थी, क्योंकि थोड़ी देर बाद ऊँट ले आया हूँ। लेकिन हकीकत यही है। यदि कोई आदमी तुममें से वहाँ मौजूद था तो उसे बुलाओ ताकि वह मेरा गवाह बने कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पहले यही जवाब दिया था और फिर बाद में ऊँटों का प्रबंध हुआ। बहरहाल, लोगों ने कहा: "हम तो आपको अपने निकट सच्चा मानते हैं और हम अवश्य वही करेंगे जो आप पसंद करेंगे।" हज़रत अबू मूसा उनमें से कुछ आदमियों को लेकर चले गए, यहाँ तक कि उन लोगों के पास आए जिन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बात सुनी थी, यानी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का उन्हें सवारी देने से इन्कार करना और फिर उसके बाद उन्हें देना। तो उन्होंने उनसे वही बयान किया जो हज़रत अबू मूसा ने उनसे बयान किया था।

(सहीह बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, अध्याय: तबूक का युद्ध... हदीस 4415)(सहीह बुखारी, किताब फ़र्ज़ुल ख़ुम्स, अध्याय: और यह प्रमाण है कि ख़ुम्स (एक-पाँचवाँ हिस्सा) मुसलमानों की आवश्यकताओं के लिए है, हदीस 3133)

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कसम खाने के बारे में कि इसकी क्या वजह है और फिर यह कि कसम की क्या अहमियत है, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी एक जगह व्याख्या में इसकी विवेचना बयान की है। वे लिखते हैं कि "यहाँ एक सवाल पैदा होता है कि आपके पास सवारी थी ही नहीं, तो आपने यह कसम क्यों खाई कि 'अल्लाह की कसम! मैं तुम्हें सवारी नहीं दूँगा'? पवित्र क़ुरआन, हदीस और इतिहास से पता चलता है कि वास्तव में आपके पास सवारी थी ही नहीं। और कसम के मायने यह हैं कि कोई चीज़ मौजूद हो और देने से इन्कार कर दिया जाए। अब क्या कोई यह कसम खा सकता है कि मैं चाँद के पास नहीं जाऊँगा या मैं सूरज के पास नहीं जाऊँगा? या कोई यह कसम खाता है कि मैं एक ही बार में हाथी नहीं निगलूँगा? इसी तरह, सवाल यह है कि जब आपके पास सवारी थी ही नहीं, तो आपने कसम क्यों खाई? इसका जवाब यह है कि असभ्य और अशिक्षित लोग दूसरे की बात का विश्वास नहीं करते जब तक कि कसम न खाई जाए। हमारे पास कभी-कभी ऐसे लोग आते रहते हैं जो कहते हैं कि हमारा फलाँ काम करा दीजिए। हम कहते हैं, यह काम हम नहीं कर सकते। वे कहते हैं, आप सब कुछ कर सकते हैं।" यानी गोया हम काम तो कर सकते हैं, मगर झूठ बोलते हैं कि हम नहीं कर सकते। "इसी तरह, वे लोग भी असभ्य और अशिक्षित थे, वे नए-नए आए थे और उन्हें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सच्चाई, प्रतिष्ठा, महानता और उच्च चरित्र का पता नहीं था। जब आपने उनसे फ़रमाया कि मेरे पास सवारी नहीं है, तो उन्होंने समझा कि सवारी तो है, मगर आप इन्कार कर रहे हैं। इसलिए जिद की कि आप तो बादशाह हैं, आपके पास सवारियाँ क्यों नहीं होंगी? इसके अलावा, अरब लोगों की आदत है कि जब तक कसम न खाई जाए, उनकी किसी बात पर विश्वास नहीं होता। मामूली-मामूली बातों पर वे 'वल्लाह', 'बिल्लाह', 'सुम्म ताल्लाह' कहते रहते हैं। इसलिए, उनके सवारी माँगने की जिद का एक ही जवाब था कि आप कसम खाते। चूँकि उन लोगों ने आपके जवाब को बहाना समझा था, इसलिए आपने उन्हें संतुष्ट करने और अपना पीछा छुड़ाने के लिए कसम खाई। वे चले गए, तो (बाद में) सवारी भी आ गई और आपने दोबारा उन्हें बुलाकर सवारी दे दी। इसलिए वह कसम इसलिए थी कि 'मेरा समय बर्बाद मत करो'। और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जो फ़रमाया, वह एक इशारा था। हालाँकि मुँह से तो नहीं कहा, लेकिन भाव यही था कि 'मेरा समय बर्बाद मत करो' और जिद न करो। और सवारी आपने इसलिए दी कि यह भलाई का अवसर था और आप इस अवसर को गँवाना नहीं चाहते थे।"

(भलाई के आह्वान पर तुरंत अमल करो, अन्वारुल उलूम, खंड 18, पृष्ठ 571-572)

सूरा तौबा की आयत 92, जो मैंने पहले भी पढ़ी थी: "और उन लोगों पर कोई दोष नहीं है जो तुम्हारे पास इसलिए आते हैं कि तुम उन्हें (युद्ध पर साथ ले जाने के लिए) किसी सवारी पर बैठा दो, तो तुम उन्हें जवाब देते हो कि मैं तो कुछ नहीं पाता जिस पर मैं तुम्हें सवार कर सकूँ। इस पर वे इस हाल में वापस होते हैं कि इस दुख से कि वे कुछ नहीं रखते जिसे (अल्लाह के मार्ग में) खर्च कर सकें, उनकी आँखों से आँसू बह रहे होते हैं।" (सूरा अत-तौबा: 92)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसकी व्याख्या में लिखा कि "यह आयत अपने लागू होने के लिहाज से सामान्य है, मगर जिन व्यक्तियों की ओर संकेत है, वे सात गरीब मुसलमान थे जो जिहाद पर जाने के लिए बेचैन थे, मगर अपने दिल की इच्छा पूरी करने के साधन नहीं रखते थे। ये लोग नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए और निवेदन किया कि हमारे लिए सवारी का प्रबंध फरमा दीजिए। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अफसोस है, मैं कोई प्रबंध नहीं कर सकता। तो उन्हें बड़ी पीड़ा हुई। उनकी आँखों में आँसू भर आए और वे वापस चले गए। कहा जाता है कि उनके चले जाने के बाद हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने तीन ऊँट दिए और चार दूसरे मुसलमानों ने दिए। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हर एक आदमी को एक-एक ऊँट दे दिया। क़ुरआन ने यह घटना इसलिए बयान की है ताकि इन गरीब मुसलमानों की ईमानदारी के विपरीत उन लोगों को दिखाया जाए जो धनी थे और यात्रा पर जाने के साधन भी रखते थे, मगर झूठे बहाने ढूँढ़ते थे।" एक तरफ तो गरीबों की यह हालत है, लेकिन एक जोश है, उत्साह है, विश्वास है और दूसरी तरफ धनी लोग हैं जो अपने आप को मुसलमान तो कहते थे, लेकिन कपटाचार से भरे हुए थे। "इस आयत से यह भी पता चलता है कि जो लोग मदीना में पीछे रह गए थे, वे सब कपटाचारी नहीं थे, बल्कि उनमें से कुछ के पास सामान नहीं था, इसलिए भी उन्हें पीछे रहना पड़ा, बल्कि उनमें ईमानदार मुसलमान भी थे, मगर वे इसलिए नहीं जा सके क्योंकि उनके पास जाने का सामान नहीं था।"

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल, बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
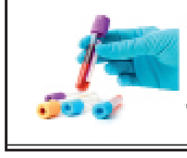
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

(हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के पाठ (अप्रकाशित), सूरा अत-तौबा की आयत 92 की व्याख्या)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि "मुसलमान अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस एलान पर कि 'हम शाम (सीरिया) की ओर जाने वाले हैं', ईमानदारी और जोश से बढ़-चढ़कर त्याग कर रहे थे। गरीब मुसलमानों के पास युद्ध का सामान कहाँ था?" उनके पास तो कुछ भी नहीं था। "सरकार का खजाना भी खाली था। उनके समृद्ध भाई ही उनकी मदद के लिए आ सकते थे। चुनाँचे, हर व्यक्ति त्याग में एक-दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा था। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस दिन अपने धन का अधिकांश हिस्सा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में पेश कर दिया, जो एक हज़ार सोने के दीनार थे, यानी..." (जिस समय आपने बयान किया, उस समय के हिसाब से) "पच्चीस हज़ार रुपए।" (आजकल तो उसकी कीमत लाखों में होगी।) "इसी तरह, अन्य सहाबियों ने अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार चंदे दिए और गरीब मुसलमानों के लिए सवारियाँ या तलवारें या भाले मुहैया किए गए। सहाबियों में त्याग का इतना जोश था कि यमन के कुछ लोग, जो इस्लाम लाकर मदीना में आकर बस गए थे और बहुत ही गरीबी की हालत में थे, उनके कुछ लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए और कहा: 'हे अल्लाह के रसूल! हमें भी अपने साथ ले चलिए। हम कुछ और नहीं चाहते, हम सिर्फ यह चाहते हैं कि हमें वहाँ तक पहुँचने का सामान मिल जाए।' पवित्र क़ुरआन में इन लोगों का जिक्र इन शब्दों में आता है:" जैसा कि पहले पढ़ा गया है, "'और उन लोगों पर कोई दोष नहीं है जो तुम्हारे पास इसलिए आते हैं कि तुम उनके लिए ऐसा सामान मुहैया कर दो जिसके जरिए वे वहाँ पहुँच सकें, मगर तुमने उन्हें कहा कि मेरे पास तो तुम्हें वहाँ पहुँचाने का कोई सामान नहीं। तब वे तुम्हारी सभा से उठकर चले गए और उनकी आँखों से इस दुख में आँसू बहते थे कि अफसोस! उनके पास कोई धन नहीं जिसे खर्च करके वे आज इस्लामी सेवा कर सकें।" अबू मूसा उन लोगों के सरदार थे। जब उनसे पूछा गया कि आपने उस समय अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से क्या माँगा था? तो उन्होंने कहा: "अल्लाह की कसम! हमने ऊँट नहीं माँगे, हमने घोड़े नहीं माँगे, हमने सिर्फ यह कहा था कि हम नंगे पाँव हैं।" हमारे पास तो पाँव में जूती भी नहीं है, बूट भी नहीं हैं। "और इतना लंबा सफर पैदल नहीं चल सकते। यदि हमें सिर्फ जूतियों के जोड़े मिल जाएँ तो हम जूतियाँ पहनकर ही दौड़ते हुए अपने भाइयों के साथ इस युद्ध में शामिल होने के लिए पहुँच जाएँगे।"

(दीबाचा तफ्सीरिल क़ुरआन, अन्वारुल उलूम, खंड 20, पृष्ठ 360-361)

यह जज्बा था। इस युद्ध पर जाते समय मदीना में प्रतिनिधि नियुक्त करने के बारे में, कि तबूक के अवसर पर मदीना में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने किसको अपना उप-नियुक्त किया, इसके बारे में विभिन्न मत मिलते हैं। एक मत के अनुसार, नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत मुहम्मद बिन मसलमा रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीना में अपना अमीर नियुक्त फ़रमाया। इसके अलावा हज़रत सिबाअ बिन उर्फुता रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम रज़ियल्लाहु अन्हु के नाम भी आते हैं।

(अस-सीरतुल हलबिया, खंड 3, पृष्ठ 185, तबूक का युद्ध, दारुल कुतुब इल्मिया, 2002 ई.)

इन विभिन्न वर्णनों को देखा जाए कि किस तरह इनमें सामंजस्य पैदा किया जाए, किस तरह इनकी समन्वयात्मक व्याख्या की जाए। इन चारों के जो नाम आते हैं, उन्हें किस तरह समझा जाए कि क्या वास्तव में ये सही हैं या नहीं, तो एक यह है कि ये चारों व्यक्ति ही उप-नियुक्त किए गए थे, लेकिन उनकी जिम्मेदारियों में अंतर था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की जिम्मेदारी नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के परिवार की देखभाल थी। हज़रत मुहम्मद बिन मसलमा मदीना वालों के सामान्य कार्यों के जिम्मेदार थे और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम रज़ियल्लाहु अन्हु के जिम्मे नमाजों की इमामत थी। हज़रत सिबाअ बिन उर्फुता रज़ियल्लाहु अन्हु को पहले मदीना का सामान्य उप-नियुक्त नियुक्त किया गया था और फिर उनकी जगह हज़रत मुहम्मद बिन मसलमा रज़ियल्लाहु अन्हु को नामित कर दिया गया था।

(शरहुल अल्लामा अज़-ज़र्क़ानी अला अल-मवाहिबिल लदुन्निया, खंड 4, पृष्ठ 81, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत, 1996 ई.)(दाइरा मआरिफे सीरते मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, पृष्ठ 480, बज़्म-ए-इकबाल, लाहौर)

चूँकि यह एक लंबी यात्रा थी, इसलिए नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने परिवार की देखभाल और घरेलू जरूरतों की पूर्ति के लिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीना में ही रहने का आदेश दिया था। कपटाचारी, जिनका काम ही आलोचना और निंदा करना था, हज़रत अली के मदीना में छोड़े जाने पर बातें बनाने लगे कि यह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए बोझ थे, इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उन्हें साथ लेकर नहीं गए। इन आलोचनाओं को सुनकर या आस-पास के कपटाचारियों को देखकर स्वयं ही घबराकर हज़रत अली ने हथियार लिया और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हो गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अभी मदीना से तीन किलोमीटर की दूरी पर 'जुरुफ' नामक स्थान पर ही ठहरे हुए थे। हज़रत अली ने अपनी चिंता और घबराहट का जिक्र किया और निवेदन किया कि मुझे औरतों और बच्चों में छोड़ आए हैं। मैं ताकतवर भी हूँ, हैसियत भी रखता हूँ। तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली को दिलासा देते हुए ऐसा वाक्य फ़रमाया जिसने हज़रत अली की महानता और प्रतिष्ठा को और बढ़ा दिया।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया:

"क्या तुम इस बात से संतुष्ट नहीं हो कि तुम मेरे लिए उसी स्थान पर हो जिस पर हारून, मूसा के लिए थे, सिवाय इसके कि मेरे बाद कोई नबी करीम नहीं है?"

यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जब कोह-ए-तूर पर गए तो उनके पीछे हज़रत हारून अलैहिस्सलाम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के प्रतिनिधि थे, लेकिन वे तो नबी करीम भी थे। तुम भी मेरे प्रतिनिधि होगे, लेकिन नबी करीम नहीं होगे।

(सहीह बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, अध्याय: तबूक का युद्ध और यह कठिनाई वाला युद्ध है, हदीस 4416)(अल-लौलौल मकनून, सीरत विश्वकोश, खंड 9, पृष्ठ 472, दारुस्सलाम)

तबूक के लिए मुसलमानों की संख्या के बारे में लिखा है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम युद्ध की तैयारी के लिए हर तरह के बाहरी साधन करने के बाद प्रार्थना की ओर मुड़े और तैयारी के आरंभ से लेकर तबूक की ओर प्रस्थान तक यह प्रार्थना करते रहे: "हे अल्लाह! यदि यह छोटी-सी समूह नष्ट हो गई तो फिर इस धरती पर तेरी उपासना करने वाला कोई नहीं होगा।"

अद्भुत संयोग है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सबसे पहले युद्ध (बद्र की लड़ाई) के अवसर पर भी इस प्रार्थना का उल्लेख मिलता है और आपके इस अंतिम युद्ध के अवसर पर भी इस प्रार्थना का उल्लेख मिलता है।

(अल-मुअजमुल कबीर लित्तबरानी, खंड 18, पृष्ठ 231-232, दार इहयाउत तुरासिल अरबी, 2002 ई.; कुन्ज़ुल उम्माल, खंड 7, भाग 13, पृष्ठ 18, हदीस: 36183, दारुल कुतुब इल्मिया, 2004 ई.; सबुलुल हुदा वर्रशाद, खंड 5, पृष्ठ 434, दारुल कुतुब इल्मिया, 1993 ई.)

बहरहाल, भीषण गर्मी के मौसम में लंबी यात्रा और अन्य बहुत सी समस्याओं तथा कपटाचारियों के प्रचार के बावजूद तीस हज़ार की संख्या में एक बहुत बड़ी सेना तैयार हो गई। इसमें दस हज़ार घुड़सवार थे। यह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जीवन में किसी भी युद्ध के लिए सबसे बड़ी सेना थी। सेना की संख्या विभिन्न वर्णनों में अलग-अलग बताई गई है। एक वर्णन के अनुसार चालीस हज़ार का भी उल्लेख मिलता है। एक वर्णन में सेना की संख्या सत्तर हज़ार भी बताई गई है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ दस हज़ार घोड़े या कुछ के अनुसार बारह हज़ार घोड़े थे।

इतिहासकारों का सहमति तीस हज़ार पर ही है और अधिकांश इतिहासकारों ने तीस हज़ार के वर्णन को सही कहा है और यह एक अनुमान है, क्योंकि उस समय योद्धाओं की गिनती के लिए कोई रजिस्टर या रिकॉर्ड आदि तो नहीं होता था, जैसा कि बाद में खिलाफत-ए-राशिदा में यह प्रथा जारी हो गई थी।

(अस-सीरतुल हलबिया, खंड 3, पृष्ठ 185, तबूक का युद्ध, दारुल कुतुब इल्मिया, 2002 ई.)(अल-लौलौल मकनून, सीरत विश्वकोश, खंड 9, पृष्ठ 474, दारुस्सलाम)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अंसार और अरब के सभी कबीलों को यह आदेश दिया कि वे 'लिवा' (छोटा झंडा) या 'राया' (बड़ा झंडा) बना लें। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तबूक के युद्ध में सबसे बड़ा

झंडा हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को प्रदान किया। इसके अलावा हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अन्हु या कुछ वर्णनों के अनुसार हज़रत हुबाब बिन मुन्ज़िर रज़ियल्लाहु अन्हु को भी झंडे प्रदान किए गए।

(अत-तबक़ातुल कुबरा लि-इब्ने सअद, खंड 2, पृष्ठ 125, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत, 1990 ई.)(अस-सीरतुल हलबिया, खंड 3, पृष्ठ 186, तबूक का युद्ध, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत, 2002 ई.; शरहुल अल्लामा अज़-ज़र्कानी अला अल-मवाहिबिल लदुन्निया, खंड 4, पृष्ठ 83, दारुल कुतुब इल्मिया, 1996 ई.; अल-लौलौल मकनून, सीरत विश्वकोश, खंड 9, पृष्ठ 475, दारुस्सलाम)

उस समय काफिले में निकलते थे तो कोई न कोई मार्गदर्शक, जो रास्तों का अच्छी तरह जानकार हो, वह भी रखा जाता था। तबूक के युद्ध के अवसर पर इसके नियुक्ति के बारे में उल्लेख है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मार्गदर्शक के तौर पर अलकमा बिन फगवा ख़ुज़ाअई और उसके पिता को चुना, जो रास्तों से अच्छी तरह परिचित थे और जल्दी सही रास्ते से ले जा सकते थे।

(शरहुल अल्लामा अज़-ज़र्कानी अला अल-मवाहिबिल लदुन्निया, खंड 4, पृष्ठ 84, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत, 1996 ई.)

हज़रत कअब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि तबूक के लिए नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम गुरुवार के दिन निकले और आप गुरुवार के दिन यात्रा करना पसंद करते थे।

(सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद वस्सीर, अध्याय: जो युद्ध का इरादा करे तो उसके लिए तैयारी करे... हदीस 2950)

सामान्य नियम के अनुसार, मदीना से कुछ दूरी पर 'सनिय्यतुल विदा' के स्थान पर लोग इकट्ठे होना शुरू हो गए और फिर जब सारी तैयारी हो गई तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना से तबूक की ओर रवाना हुए। कपटाचारियों का मुखिया अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल भी अपने एक आखिरी कपटपूर्ण हथकंडे के तौर पर एक सेना लेकर 'सनिय्यतुल विदा' के निचले हिस्से में कोह ज़ुबाब पर डेरा डाले हुए था और यही छाप दे रहा था कि जैसे वह भी मुसलमानों के साथ तबूक के लिए तैयार है, लेकिन ज्योंही नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सेना को तैयारी का आदेश दिया, तो अब्दुल्लाह बिन उबई यह कहकर अपनी सेना समेत (या कहा जाता है कि उसकी सेना काफी बड़ी संख्या में थी) मदीना वापस आ गया कि "ये मुसलमान रोमनों के साथ युद्ध को एक खेल समझ रहे हैं।" यह कहते हुए आ गया कि "यह कोई खेल तो नहीं है। रोमन बहुत बड़ी सत्ता है।" उसने यह कहा कि इतनी सख़्त गर्मी और इन हालात में इतना दूर का सफर कोई समझदारी का काम नहीं है। कहने लगा: "मैं तो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथियों को रोमनों के हाथों में बंदी के तौर पर देख रहा हूँ।" यह कहकर वह वापस चला गया और मकसद यह था कि शायद मुसलमानों का दिल छोटा हो जाएगा और उसके गुमान में शायद कुछ मुसलमान नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का साथ छोड़ देंगे, लेकिन यह हमेशा की तरह नाकाम और निराश ही लौटा। उसने उहुद की लड़ाई में भी ऐसा ही किया था। उस समय भी यह मुसलमानों की सेना के साथ कुछ दूर तक साथ गया था और फिर रास्ते में अपने तीन सौ साथियों समेत वापस चला गया था, जबकि मुसलमानों की कुल संख्या एक हज़ार थी और फिर सात सौ बच गए थे। और यह (तबूक की सेना) तो काफी बड़ी सेना थी।

(शरहुल अल्लामा अज़-ज़र्कानी अला अल-मवाहिबिल लदुन्निया, खंड 4, पृष्ठ 84; खंड 2, पृष्ठ 400-401, दारुल कुतुब इल्मिया, 1996 ई.)(तारीख़ुत तबरी, खंड 2, पृष्ठ 182, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत, 2012 ई.)

बहरहाल, यह भी उल्लेख मिलता है कि इस युद्ध में एक गुलाम अपने मालिक की अनुमति के बिना शामिल होने के लिए आ गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जब यह बात पता चली तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बिना अनुमति शामिल होने वाले गुलाम को डाँटा और इसके विवरण में वहाँ लिखा है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने 'सनिय्यतुल विदा' में डेरे के दौरान एक हथियारबंद गुलाम को देखा जो अपनी मालकिन की अनुमति के बिना आया था, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उससे फ़रमाया कि तुम अपनी मालकिन के पास वापस चले जाओ। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उससे पूछा, उसने बताया कि नहीं, अनुमति नहीं ली। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा: वापस चले जाओ और फ़रमाया कि हमारे साथ लड़ाई में शामिल मत होना। यदि तुम युद्ध में मारे गए तो नरक में जाओगे।

(शरहुल अल्लामा अज़-ज़र्कानी अला अल-मवाहिबिल लदुन्निया, खंड 4, पृष्ठ 83-84, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत, 1996 ई.)

अर्थात यह जो अमानतदारी है, उसका भी तकाजा यही है कि मालिक से अनुमति ली जाए। बहरहाल, इस युद्ध के और विवरण इंशाअल्लाह आगे भी बयान करूँगा।

कुछ जन्नतवासी लोगों का भी जिक्र करना चाहता हूँ। उनकी जनाज़ा बाद में पढ़ाऊँगा।

पहला वर्णन है माननीय गुलाम मुहियुद्दीन सुलेमान साहिब का, मुरब्बी सिलसिला, इंडोनेशिया। ये पिछले दिनों सड़सठ वर्ष की आयु में जन्नतवासी हो गए।

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। निश्चय ही हम अल्लाह के हैं और उसी की ओर लौटने वाले हैं। उनके दादा हाजी दामेरी साहिब ने 1932 में मौलाना रहमत अली साहिब (मरहूम) के हाथ पर बैयअत की थी। प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद, मरहूम आगे की शिक्षा प्राप्त करने के लिए रब्वाह चले गए और वहाँ उन्हें जामिआ रब्वाह की 'फसले खास' में दाखिला मिल गया। जुलाई 1985 में वे वहाँ से 'शहादतुल अजानब' की परीक्षा पास करके वापस इंडोनेशिया आ गए। यह हज़रत खलीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह के जमाने में हुआ था। आप रहमहुल्लाह ने उनकी नियुक्ति इंडोनेशिया में जकार्ता और वहाँ के विभिन्न शहरों में की और क्षेत्रीय प्रचारक के तौर पर यह काम करते रहे। इसी तरह, केंद्रीय समितियों के भी सदस्य रहे। उनकी सेवा का काल लगभग चालीस वर्ष है। उनके पीछे दो बेटे और एक बेटी हैं। उनके एक बेटे मुस्लिहुद्दीन अहसान साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं और वे भी वहीं सेवा अंजाम दे रहे हैं। आपके बारे में मिलने वालों और रिश्तेदारों ने यह बात व्यक्त की है कि वे एक ईमानदार, सीधे और बेहद प्यार करने वाले इंसान थे। अपना जीवन हमेशा धर्म की सेवा, अहमदीया जमाअत और दूसरों की भलाई के लिए समर्पित कर रखा था। आपमें विनम्रता, कोमलता और सिद्धांतप्रियता स्पष्ट थी। जो भी आपसे मिलता, आपकी ईमानदारी और सरल स्वभाव से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। शिक्षा और प्रशिक्षण के क्षेत्र में आपकी सेवाएँ सराहनीय हैं। आपने हमेशा ज्ञान के साथ चरित्र को महत्व दिया और हर समय इस बात की चिंता रही कि नई पीढ़ी को अच्छे चरित्र और विश्वास की बुनियाद पर तैयार किया जाए। प्रचार के काम में भी आपने दिलोजान से हिस्सा लिया और हमेशा ईमानदारी, गरिमा और प्यार के साथ अपना संदेश पहुँचाया। खिलाफत से आपका गहरा लगाव था। आपकी वफादारी मिसाली थी। एक अल्लाह पर भरोसा रखने वाले इंसान थे। अंतिम दिनों में आपने बड़े धैर्य और स्थिरता का प्रदर्शन किया। बीमारी में भी कोई शिकायत जबान पर नहीं लाए और हमेशा कृतज्ञता के भाव व्यक्त किए। अल्लाह तआला मरहूम पर क्षमा और दया का व्यवहार फ़रमाए।

दूसरी नमाज़ जनाज़ा और जिक्र माननीय डॉक्टर मुहम्मद शफ़ीक सहगल साहिब का है। ये जिला मुल्तान के अमीर भी रहे हैं और फिर उसके बाद उप वकीलुत तस्नीफ, तहरीक-ए-जदीद, रब्वाह भी रहे। ये भी पिछले दिनों जन्नतवासी हो गए। निश्चय ही हम अल्लाह के हैं और उसी की ओर लौटने वाले हैं।

मरहूम अल्लाह तआला के फजल से वसीयत करने वाले (मूसी) थे। पीछे तीन बेटे हैं। उनके परिवार में अहमदियत उनके पिता माननीय मियाँ मुहम्मद उमर सहगल साहिब (मरहूम) के जरिए आई थी, जिन्होंने खिलाफ़त-ए-सानिया (दूसरी खिलाफत) के दौरान अहमदियत कबूल की थी। ये पी. एच. डी डॉक्टर थे। उन्होंने मैट्रिक के बाद अपने आप को समर्पित (वक्फ) कर दिया। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की सेवा में अपने आप को पेश किया और आपने फ़रमाया कि शिक्षा प्राप्त करो। बहरहाल, शिक्षा प्राप्त करने के लिए विज्ञान में दिलचस्पी थी। उस समय फजल उमर रिसर्च सेंटर बनाने की योजना थी, तो उन्होंने पहले वहाँ से एम.एस. सी. (कैमिस्ट्री) की और फिर यहाँ यू.के. से कैमिस्ट्री में पी. एच. डी की और आपको यह गौरव भी प्राप्त है कि आपके एक शिक्षक नोबेल पुरस्कार विजेता भी थे। बहरहाल, जब ये आ गए, तो तुरंत उस समय तो संस्थान (इंस्टीट्यूट) नहीं बन सका था, इसलिए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें वहाँ नहीं लगाया और ये खाली ही थे, तो उनके पिता ने कहा कि जब तक जमाअत को जरूरत नहीं है, उन्हें अनुमति दें कि वे मेरे साथ व्यापार में शामिल हो जाएँ। चुनाँचे, वे अपने पिता के साथ व्यापार में शामिल हो गए, लेकिन इसके साथ ही विभिन्न हैसियतों में समुदाय की सेवा की भी उन्हें तौफ़ीक मिली। लगभग चौदह-पंद्रह वर्ष तक जिला मुल्तान के अमीर के तौर पर

सेवा की तौफ़ीक पाई। इसी तरह, फ़ुरकान फोर्स में भी शामिल हुए। हज़रत खलीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह के जमाने में कलकत्ता में दो परिवारों का कोई मामला था, लंबा झगड़ा था और वे उनके रिश्तेदारों में से भी थे, तो हज़रत खलीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने एक आयोग बनाकर उन्हें वहाँ जाँच के लिए भेजा और उन्होंने बड़ी ख़ूबसूरती से मामला निपटाया। हज़रत खलीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने उनसे यह व्यक्त किया था कि मुझे पता है कि आप रिश्तेदारी का भी ख्याल नहीं रखेंगे और बड़ी ईमानदारी से फैसला करेंगे। चुनाँचे, ऐसा ही हुआ। 1991 में हज़रत खलीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह के आदेश पर ये युगांडा भी गए, वहाँ तेल की मिल (ऑयल मिल) लगानी थी। अपनी निगरानी में वहाँ तेल की मिल लगवाई और इसी तरह अफ्रीका के तीन अन्य विभिन्न देशों में और एक यूरोपीय देश में भी उन्हें कुछ जिम्मेदारियाँ सौंपी गईं, जो उन्होंने पूरी कीं। मुल्तान में उनकी खाद्य तेल (Edible Oil) की अपनी भी एक बड़ी तेल मिल थी। और चाहे वे अपना व्यवसाय ही करते थे, लेकिन यह एहसास उन पर हमेशा हावी रहा कि मैंने अपना जीवन समर्पित किया हुआ है (वाकिफ-ए-जिंदगी हूँ) और अपनी व्यावसायिक व्यस्तताओं को भी समुदाय के कामों पर कुर्बान कर देते थे।

बहरहाल, 2003 में उन्होंने मुझे लिखा कि अब मैं अपने आप को फिर से समर्पित (वक्फ) करना चाहता हूँ। बाकी जीवन सेवा करना चाहता हूँ। चुनाँचे, मैंने उन्हें वहाँ तहरीक-ए-जदीद में उप वकीलुत तस्नीफ के तौर पर लगाया। पढ़े-लिखे थे। उनकी अंग्रेजी भी अच्छी थी, धार्मिक ज्ञान भी था, तो यह काम उन्होंने बड़ी ख़ूबसूरती से अंजाम दिया।

उनके बेटे महमूद सहगल साहिब कहते हैं कि उन्होंने एक सक्रिय, सार्थक और इबादत करने वाला जीवन जीने की तौफ़ीक पाई। पवित्र कुरआन की तिलावत और उसके अर्थों पर विचार करना भी आपका विशेष गुण था। आपके जन्नतवास पर शोक व्यक्त करने वालों में से अधिकांश ने यही कहा कि आपके स्वभाव में कोमलता थी। दयालु, ईमानदारी के जज्बे से भरे हुए, प्यार करने वाले इंसान थे और उनका मार्गदर्शन और प्रशिक्षण देने का तरीका बहुत प्यारा था। कहते हैं, हमें भी हमेशा समुदाय के निजाम (व्यवस्था) की आज्ञापालन की सीख देते और यदि कोई सुधार योग्य बात देखें भी तो अपनी राय सिर्फ उचित मंच (फोरम) पर दो, हर जगह बातें न करो। और हमेशा यह कहते थे कि तुम लोगों को मत देखो, पदाधिकारियों की तरफ मत देखो, तुमने खलीफा-ए-वक़्त (वर्तमान खलीफा) से वफादारी की शपथ (बैयत) ली है, बस यह ख्याल रखो कि जो बात हमें करनी है, खलीफा-ए-वक़्त से करनी है और उससे वफादारी का वादा पूरा करना है। अल्लाह तआला उन पर क्षमा और दया का व्यवहार फ़रमाए।

तीसरा जिक्र माननीया बशीरा परवेज़ मन्हास साहिबा का है, जो परवेज़ मन्हास साहिब (यू.एस.ए.) की पत्नी थीं। ये भी पिछले दिनों जन्नतवासी हो गईं। निश्चय ही हम अल्लाह के हैं और उसी की ओर लौटने वाले हैं।

चौधरी फजल अहमद साहिब, पूर्व मैनेजर करीम नगर और नुसरत आबाद (वहाँ के समुदाय के फार्म थे, ये उनके मैनेजर थे) की बेटी थीं। शादी से पहले भी ये हैदराबाद, सिंध में लजना (महिला संगठन) में काफी सेवाएँ अंजाम देती रहीं। फिर रावलपिंडी रहीं, यहाँ भी उन्हें सेवा करने का मौका मिला। और वहाँ हैदराबाद, पिंडी में हलके की यह सदरे लजना (महिला संगठन की अध्यक्ष) थीं। फिर पति के साथ अमेरिका चली गईं तो वहाँ भी अपनी मज्लिस (इकाई) में उप-अध्यक्ष के तौर पर उन्हें सेवा की तौफ़ीक मिली।

रोजे-नमाज की पाबंद, तहज्जुद (तड़के की नमाज) पढ़ने वाली, अल्लाह पर भरोसा रखने वाली, खिलाफत की प्रशंसक, मेहमाननवाज, मिलनसार, लोगों का भला करने वाली, गरीबों की हिमायती, बहुत नेक और ईमानदार महिला थीं। चंदों में नियमित और आर्थिक त्याग में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने वाली थीं। उनका खिलाफत से बड़ा लगाव था। हमेशा पत्र लिखती थीं और प्रार्थना के लिए मुझे भी लिखा करती थीं। मरहूमा वसीयत करने वाली (मौसिया) थीं। कोई संतान नहीं थी, लेकिन दूसरों के बच्चों पर बड़ी स्नेह का व्यवहार करती थीं। अल्लाह तआला उन पर क्षमा और दया का व्यवहार फ़रमाए।

(अल-फ़ज़ल इंटरनैशनल, 14 नवंबर 2025, पृष्ठ 2-7)

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

था। पंजीकृत भी नहीं था, किंतु बहरहाल हाफ़िज़ साहिब की बड़ी मेहनत और उनकी कोशिश से समुदाय वहाँ पंजीकृत हो गया। हाफ़िज़ साहिब वापस आ गए, तो एक लंबा समय तक वहाँ कोई प्रचारक नहीं था और इस पर सैम साहिब ने स्वयं ही अपनी मृत्यु तक वहाँ अपने समुदाय को संभाला और यह प्रचार भी करते रहे और समुदाय के नाम को उन्होंने कभी मंद नहीं पड़ने दिया। बड़ी उत्साहपूर्वक समुदायिक सहयोग करते थे, जब भी यहाँ केंद्र से प्रतिनिधिमंडल जाता था, तो उनकी सहायता करते थे और सदैव आगे बढ़कर उन्होंने काम किया और फलदायक काम किया।

मार्शल द्वीप समूह में समुदाय स्थापित करने में उनका प्रथम स्थान है। अधिकांश नव-दीक्षित आपके प्रयासों के परिणामस्वरूप अहमदी मुसलमान बने थे। आप मार्शल द्वीप समूह के अध्यक्ष (सदर) समुदाय भी रहे हैं। फिर यह शम्स साहिब कहते हैं कि कोसराए में मिशन स्थापित करने गया, तो वहाँ भी सैम साहिब ने सहायता की। उनके कुछ मित्र थे, वे सम्मिलित हुए और वहाँ अल्लाह के अनुग्रह से मिशन हाउस खरीदा गया और भवन बनाई गई। इसी प्रकार किरिबाती में उनके माध्यम से मिशन स्थापित करने में सहायता मिली। फिर एक अन्य स्थान पर भी उनके माध्यम से मिशन स्थापित करने में सहायता मिली। वे कहते हैं, मैंने एक बार सैम साहिब से पूछा कि क्या कारण है, आपकी कौन-सी पुण्यता है जिसके कारण आपको तीन द्वीपों में समुदाय की स्थापना और केंद्रीय भूमिका निभाने का सौभाग्य मिला है? तो उन्होंने बड़ी विनम्रता से कहा, यह सब अल्लाह तआला का अनुग्रह है, मेरा तो कोई कमाल नहीं है।

कासिम चौधरी साहिब, प्रचारक, मार्शल द्वीप समूह, कहते हैं कि बाधाओं के बावजूद वे अपने ईमान पर दृढ़ रहे। अपनी पत्नी के साथ मिलकर त्याग किए और उनकी पत्नी के त्याग से एक भूमि समर्पित (वक़्फ) हुई। उनकी पत्नी ने अपना भूखंड दिया, जिस पर आज मार्शल द्वीप समूह में पहली मस्जिद भी स्थापित है। उनके अपने शब्दों में इस्लाम स्वीकार करने का वृत्तांत इस प्रकार है। वे कहते हैं कि 1987 में मैं और मेरी पत्नी नैरी लॉन्ग आईलैंड के एक होटल में ठहरे हुए थे। एक सुबह, वे कहते हैं, अपने कमरे से बाहर निकला तो एक लंबे अफ्रीकी व्यक्ति को देखा। मैंने सलाम किया, उन्होंने सलाम किया और परिचय हुआ तो पता चला कि वे हाफ़िज़ जिब्रील सईद साहिब हैं, जो माइक्रोनेशिया के प्रथम प्रचारक थे। बहरहाल, मुलाकातें होती रहीं, संबंध बढ़ते रहे। जिब्रील साहिब ने उन्हें इस्लाम का प्रचार किया और बाइबल की आयतें दिखाईं और यह बताया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद बाइबल में एक पैगंबर के आने की सुसूचना दी गई है और मुझे आश्चर्य हुआ कि यह केवल एक आयत नहीं, बल्कि कई आयतें हैं, यहाँ तक कि नए नियम में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम स्वयं जॉन 7:16 में फ़रमाते हैं: मुझे जाना है और वह किसी को मेरे बाद भेजेगा। वे कहते हैं, यह वे तथ्य थे जो मैंने पहले कभी नहीं सुने थे और हाफ़िज़ साहिब ने मुझे अत्यंत स्पष्टता से बताया। हर बात बाइबल से बताते थे और अंततः अल्लाह तआला ने मुझे मार्गदर्शन दिया और तथ्यों को देखा तो मेरा हृदय इस्लाम की ओर झुक गया और मैंने इस्लाम स्वीकार कर लिया। वे कहते हैं, उसी दौरान जब मैंने स्वीकार कर लिया और लोगों को पता चला तो सरकारी अधिकारियों ने कहा कि हम इस्लाम को कभी मार्शल द्वीप समूह में फैलने नहीं देंगे। वे कहते हैं, मैंने इस पर हाफ़िज़ साहिब को फोन किया, वे उस समय वहाँ से जा चुके थे, तो उन्होंने कहा, आप चिंता न करें, अल्लाह तआला रास्ते खोलेगा। और वे कहते हैं, फिर अल्लाह तआला ने ऐसे रास्ते खोले कि एक दिन घर में बैठा हुआ था कि एक व्यक्ति अटॉर्नी जनरल के कार्यालय से आया और मुझसे कहने लगा कि आपके समुदाय के गठन का पंजीकरण स्वीकृत हो गया है। कहाँ तो वहाँ बड़े लोग रोकना चाहते थे और कहाँ अल्लाह तआला ने ऐसा प्रबंध फ़रमाया कि स्वयं ही पंजीकरण की स्वीकृति के कागज़ात भी प्रदान कर दिए और वह उनके घर पहुँच गई और वे कहते हैं, मैंने तत्काल वह प्रति हाफ़िज़ साहिब को भिजवा दी। फिर वे कहते हैं, बहरहाल, समय बीतने के साथ-साथ मैंने समझ लिया कि अहमदियत अन्य मुसलमानों से विशिष्ट है और मुझे इस पर बड़ा गर्व है। सदैव मेरे हृदय में एक आवाज़ उठती थी कि मैं अहमदी मुसलमान हूँ और इस पर गर्व होता था। वे कहते हैं, बीस वर्ष तक कोई प्रचारक यहाँ नहीं आया और मैं बहुत चिंतित था। हाफ़िज़ साहिब ने कहा, आप खलीफ़ा-ए-वक़्त को पत्र लिखते रहें, तो कोई न कोई प्रबंध हो जाएगा। बहरहाल, वे कहते हैं कि 2004 में मुझे केंद्र से निर्देश मिला कि एक अजनबी व्यक्ति आ रहा है, उसे हवाई अड्डे से आप ले लें। तो वे कहते हैं, मैं वहाँ हवाई अड्डे पर गया, तो कुछ देर बाद एक सज्जन मुस्कुराते हुए बाहर आए और मेरा नाम पूछा। मैंने कहा, सैम। उन्होंने उत्तर दिया, मेरा नाम कौसर है। यह

इनआमुल हक़ कौसर साहिब थे और वे कहते हैं, उस दिन से हम दोनों भाइयों की भाँति हो गए। हमने एकत्रित होकर कोसराए और पोनपेई की यात्रा की। एक सप्ताह वहाँ ठहरे और जब हम अलग हुए तो हमारे संबंध ऐसे थे जैसे हम एक-दूसरे को बहुत लंबे समय से जानते हैं। यह इस्लामी भाईचारा था। वे कहते हैं, अल्लाह के अनुग्रह से मुसलमान होने के बाद मेरे हृदय को शांति और आत्मा को संतुष्टि मिली। नमाज़ ने मुझे बदल दिया। मेरी पत्नी ने भी मेरे भीतर यह परिवर्तन महसूस किया। इसके बाद से, जब भी मुझे किसी चीज़ की आवश्यकता पड़ती, तो मैं अल्लाह से माँगता और अल्लाह तुरंत उसे पूरी कर देता। बार-बार मैंने इस सहायता को अपनी आँखों से देखा है और हर प्रार्थना में अल्लाह का धन्यवाद अदा किया है।

आपकी पोती जूलिया कहती हैं कि वे बड़े निष्ठावान मुसलमान थे, जो अपने ईमान से सांत्वना और शक्ति प्राप्त करते थे। अधिकांश समय इबादत में बिताते और क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत को अत्यंत प्रिय रखते थे। विभिन्न इस्लामी पुस्तकों का अध्ययन कर रहे होते थे। अक्सर हमने उन्हें गहन चिंतन और विचार में डूबा हुआ पाया है।

अल्लाह तआला उनसे क्षमा और दया का व्यवहार करे और उनके परिवार के कुछ लोग अहमदी नहीं हैं, अल्लाह तआला उन्हें भी यह सामर्थ्य दे कि उनकी संतान में से वे भी अहमदी बन जाएँ।

★ ★ ★

नज़ारत नश्र-व-इशाअत की ओर से प्रकाशित होने वाली पुस्तक का परिचय
ख़िलाफ़त का महत्त्व तथा इसके लाभ

यह पुस्तक 2008 ई. में ख़िलाफ़त के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर लिखी गई थी, इस पुस्तक की यह विशेषता है कि लेखक ने इस में ख़िलाफ़त से जुड़े हर पहलू को बहुत अच्छी तरह से वर्णन किया है। आंआँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद जो ख़िलाफ़त चली (अर्थात ख़िलाफ़त ए राशिदा) के दौर का भी संक्षेप में वर्णन किया है फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के बाद जो ख़िलाफ़त ए अहमदिया का निज़ाम जारी हुआ उसका बहुत विस्तार से और सुंदर शैली में वर्णन किया है। सभी ख़लीफाओं की जीवनी और उनके दौर में होने वाली जमाअत की उन्नति का वर्णन किया गया है। हर ख़लीफा के दौर में जो जमाअती उन्नति हुई, घटनाएं घटीं, मस्जिदें बनीं, जो स्कीम लागू हुईं, कबूलियत ए दुआ के लिए वृतांत इत्यादि का उल्लेख किया गया है। खिलाफ़त के बारे में इतने विस्तार से लिखी यह पहली पुस्तक है जो पाठकों को बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

बल्कि उसे एक अत्यंत आवश्यक चीज़ माना जाता है। हालाँकि झूठ प्रकृति के विरुद्ध है। झूठ उस चीज़ का नाम है कि कान ने जो कुछ सुना हो, उसके बारे में कह दिया जाए कि मैंने नहीं सुना। आँख ने जो कुछ देखा हो, उसके बारे में कह दिया जाए कि मैंने नहीं देखा। हाथ ने एक चीज़ उठाई हो, लेकिन इंसान यह कह दे कि मेरे हाथ ने वह चीज़ नहीं उठाई। एक व्यक्ति के पैर एक तरफ चले हों, लेकिन वह कह दे कि मेरे पैर उस तरफ नहीं चले। यानी इंसान दूसरे का नहीं, बल्कि अपना ही खंडन करता है और इससे अधिक प्रकृति के विरुद्ध और क्या होगा? संदेह उस चीज़ में हो सकता है जिसमें अनुमान का दखल हो। पाँचों इंद्रियों के कार्यों पर संदेह नहीं किया जा सकता। और पाँचों इंद्रियों के कार्यों के विपरीत बोलने को झूठ कहते हैं। जो व्यक्ति पाँचों इंद्रियों का खंडन करता है, वह मानो अपनी जुबान, हाथ, पैर, नाक और कान का खंडन करता है।

और फिर वह इसमें सबसे अधिक आनंद महसूस करता है कि वह अपने विरुद्ध स्वयं गवाही दे रहा है। एक इंसान के हाथ एक चीज़ को पकड़ते हैं और वह कहता है कि मैंने वह चीज़ नहीं पकड़ी, तो इसका मतलब यह होता है कि वह अपने हाथों से कह रहा है कि तुमने वह चीज़ नहीं पकड़ी। एक चीज़ उसकी जीभ चखती है, लेकिन वह कहता है कि मैंने वह चीज़ नहीं चखी, तो इसका मतलब यह होता है कि वह अपनी जीभ से कह रहा है कि तुमने वह चीज़ नहीं चखी। या उसके कान एक बात सुनते हैं और वह उसका इन्कार कर देता है, तो इसका मतलब यह होता है कि वह अपने कानों से कह रहा है कि तुमने वह बात नहीं सुनी। अब यह कितनी हास्यास्पद और अजीब बात है। लेकिन लोग इसकी परवाह नहीं करते और मौका आने पर झूठ बोल देते हैं।

(तफ्सीर-ए- कबीर, खंड चार, पृष्ठ 580 और 583, मुद्रण: कादियान 2010)

★ ★ ★

निकाह-सन्धि (मंगनी)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

''एक रिवायत में आता है कि हज़रत मुगीरा रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि जब उन्होंने किसी स्थान पर मंगनी का प्रस्ताव भेजा तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उस लड़की को देख लो, क्योंकि इस प्रकार देखने से तुम्हारे और उसके बीच अनुकूलता और स्नेह उत्पन्न होने की सम्भावना अधिक होती है।''

(तिर्मिज़ी — किताबुन निकाह, बाब फ़ि-न्नज़र इलल-मख्तूबह)

इस अनुमति को भी आज के समाज में कुछ लोगों ने गलत अर्थ में लेकर यह समझ लिया है कि एक-दूसरे को समझने के लिए हर समय पृथक बैठते रहें, अलग-अलग घूमते फिरें... यहाँ तक कि घरों में भी घंटों तक अकेले बैठते रहें। यह चीज़ भी अनुचित है। इसका अभिप्राय केवल यह है कि आमने-सामने आकर रूप देखकर एक-दूसरे को समझना सरल हो जाता है। बातचीत के दौरान कुछ चाल-ढाल और स्वभाव भी प्रकट हो जाते हैं।

फिर आजकल के समय में परिवार वालों के साथ बैठकर भोजन करने में भी कोई आपत्ति नहीं है। भोजन करते समय भी एक-दूसरे के अनेक आचरण और आदतें स्पष्ट हो जाती हैं। और यदि कोई बात अप्रिय लगे, तो बेहतर है कि पहले ही पता चल जाए, ताकि बाद में विवाद न उत्पन्न हों। और यदि अच्छी बातें पायी जाएँ तो विवाह से पहले ही एक मानसिक समानता एवं संबंध स्थापित हो जाता है।

कुछ लोग इस प्रकार भी चरित्र-विपथगामी होते हैं कि यदि किसी का रिश्ता तय हो जाए तो उसे तुड़वाने की कोशिश करते हैं। यदि लड़का-लड़की एक बार आमने-सामने बैठकर एक-दूसरे को देख लें और समझ लें, तो ऐसे लोगों को हस्तक्षेप का अवसर नहीं मिल पायेगा।

कुछ लोग दूसरी ओर चरम सीमा तक चले जाते हैं। वे यह भी बर्दाश्त नहीं करते कि लड़का-लड़की विवाह से पूर्व या प्रस्ताव के समय आमने-सामने बैठ भी सकें। इसे वे अपनी झूठी 'ग़ैरत' का नाम देते हैं।

तो इस्लामी शिक्षा एक संतुलित और मध्यम मार्ग वाली शिक्षा है न अत्यधिकता, न कमी; न एक अति, न दूसरी अति।

और उसी पर आचरण होना चाहिए।

इसी से समाज में शान्ति बनी रहती है और समाज से कलह-विवाद दूर होते हैं।''

(ख़ुतबात-ए-मस्रूर, खण्ड द्वितीय, पृष्ठ 934–935)

(शोबा रिश्ता-नाता, नज़ारत इस्लाह-ओ-इर्शाद, मरकज़िय्या क़ादियान)

★ ★ ★

130 वां जलसा सालाना क़ादियान

26, 27, और 28 दिसम्बर 2025 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 130वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 26, 27, 28 दिसंबर 2025 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयारी आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और इसे हर प्रकार से सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए जमाअत के सभी मित्र दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

ज़रूरत है

नज़ामत तामीरात क़ादियान को एक विद्युत् निरीक्षक (Electrical Supervisor) की।

आवश्यक विवरण / शैक्षिक योग्यता / अनुभव :

(1) अभ्यर्थी की आयु 18 वर्ष से कम और 30 वर्ष से अधिक न हो। (परिस्थिति के अनुसार अपवाद पर विचार किया जा सकता है।)
(2) अभ्यर्थी के पास विद्युत् क्षेत्र में प्रमाणपत्र अथवा व्यावसायिक योग्यता (जैसे औद्योगिक संस्था अथवा व्यावसायिक विद्यालय से) होना अनिवार्य है।
(3) अभ्यर्थी के पास विद्युत् निरीक्षक (Electrical Supervisor) का लाइसेंस होना चाहिए।
(4) अभ्यर्थी के पास अतिरिक्त प्रमाणपत्र हों जैसे सुरक्षा प्रमाणपत्र (Safety Certificate), प्रथम उपचार/सी.पी.आर. प्रशिक्षण प्रमाणपत्र (First Aid/CPR Training Certificate), उच्च/निम्न वोल्टेज स्विचिंग संचालन (HV/LV Switching Operations) का प्रमाणपत्र।
(5) अभ्यर्थी को विद्युत् संस्थापन, मरम्मत अथवा परियोजना कार्य में न्यूनतम 2 वर्ष का व्यावहारिक अनुभव हो।
(6) निरीक्षक अथवा प्रमुख तकनीशियन (Lead Technician) के रूप में कम से कम 1 वर्ष का अनुभव हो।
(7) औद्योगिक विद्युत् तंत्र, नियंत्रण पैनल, स्विचगियर, विद्युत् वितरण प्रणाली, तारबत्ती और कंडुइट तंत्र के कार्य का अनुभव हो।
(8) विद्युत्कर्मियों अथवा तकनीशियनों की टीम का प्रबंधन करने का अनुभव हो।
(9) अभ्यर्थी को विद्युत् संहिता (Electrical Codes) और सुरक्षा मानकों की गहन समझ हो।
(10) विद्युत् चित्रों और ब्लूप्रिण्ट को पढ़ने और समझने की क्षमता हो।
(11) विद्युत् समस्याओं के निवारण (Troubleshooting) का अनुभव हो।
(12) उत्तम संप्रेषण और टीम नेतृत्व की कुशलता हो।
(13) अभ्यर्थी स्वस्थ हो। धार्मिक एवं नैतिक स्थिति उत्तम हो। सभ्य हो और सहकर्मियों के साथ सहनशील व्यवहार रखता हो।

आवश्यक निर्देश :

(1) साप्ताहिक समाचारपत्र 'बदर' में प्रकाशित अंतिम घोषणा के 2 माह के भीतर प्राप्त होने वाले आवेदन ही विचारार्थ लिए जाएंगे।
(2) इच्छुक अभ्यर्थी अपने आवेदन मुद्रित प्रपत्र पर अपने जिला अमीर / स्थानीय अमीर / सदर जमाअत / मुबलिग इंचार्ज के सत्यापित हस्ताक्षर तथा मुहर सहित प्रेषित करें।
(3) साक्षात्कार में सफलता की स्थिति में अभ्यर्थी को नूर अस्पताल, क़ादियान से चिकित्सीय परीक्षण करवाना अनिवार्य होगा और केवल वही अभ्यर्थी सेवा का अधिकारी होगा जो नूर अस्पताल के चिकित्सा बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार स्वस्थ एवं तंदुरुस्त पाया जाएगा।
(4) क़ादियान आने-जाने का यात्रा व्यय तथा चिकित्सीय प्रमाणपत्र का व्यय अभ्यर्थी को स्वयं वहन करना होगा।
(5) साक्षात्कार के समय अपनी मूल शैक्षिक प्रमाण-पत्र साथ लाना आवश्यक होगा।
नोट : साक्षात्कार की तिथि से अभ्यर्थियों को पश्चात सूचित किया जाएगा।

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें :

नज़रत दीवान, सदर अंजुमन अहमदिया, क़ादियान, गुरदासपुर, पंजाब – पिन कोड : 143516
मोबाइल : 9682587713, 9888232530, 9682627592
कार्यालय : 01872-501130, Email: diwan@qadian.in

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-क़रीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुत्बात जुमा और खिताबात, अध्यात्मपूर्ण संदेश, ख़ुत्बा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इल्म के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर कर्म करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की शिक्षा-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी शिक्षा-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इसका सम्मान किया जाए। इसलिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(संस्थान)

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछताछ फ़रमाई कि अपने घर वालों के लिए भी कुछ छोड़ा है कि नहीं?

तो उन्होंने निवेदन किया कि घर वालों के लिए अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को छोड़ आया हूँ।

तबूक के अभियान के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तंगी और कठोरता के बावजूद यह निश्चय किया कि रोमवासियों को आगे बढ़ने की मोहलत दिए बिना स्वयं उनके क्षेत्र में जाकर उनके विरुद्ध एक निर्णायक युद्ध लड़ा जाए।

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आम तौर पर युद्ध के अभियानों को कुछ गुप्त रखा करते थे, लेकिन ख़ैबर के अभियान के बाद तबूक का अभियान ऐसा था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सामान्य घोषणा फ़रमाई।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस अवसर पर दस हज़ार दीनार दान किए, तो आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए यह प्रार्थना की:

غَفَرَ اللّٰہُ لَکَ یَا عُثْمَانُ مَا اَسْرَرْتَ وَمَا اَعْلَنْتَ وَمَا ھُوَ کَائِنٌ اِلٰی یَوْمِ الْقِیَامَۃِ مَا یُبَالِیْ مَا عَمِلَ بَعْدَھَا

'ग़फ़रल्लाहु लका या उस्मानु मा असररता व मा अलनता व मा हुवा काइनुन इला यौमिल क़ियामति मा युबाली मा अमिला बअदहा'।

अर्थात हे उस्मान! अल्लाह तुझसे क्षमा का व्यवहार फ़रमाए, जो तूने गुप्त रूप से किया और जो तूने खुलेआम किया और जो क़ियामत तक होने वाला है।

इसके बाद वह जो भी कर्म करे, उसे कोई चिंता नहीं होनी चाहिए।

अल्लाह तआला का बड़ा अनुग्रह है कि जमात अहमदिया के सदस्य इस बात को समझते हैं कि आर्थिक त्याग की क्या महत्ता है...

धनी लोगों को भी, संपन्न लोगों को भी हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के उदाहरण सामने रखने चाहिएँ और फिर अपने त्याग के स्तर को बढ़ाना चाहिए।

रबवा में मस्जिद महदी पर आतंकवादी हमले के घायलों के लिए प्रार्थनाओं का आह्वान

अल्लाह तआला उन सभी को पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करे और भविष्य में हर बुराई से, हर क्षति से हर स्थान पर जमात के सदस्यों को बचाए।

युद्ध-ए-तबूक के संदर्भ में पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र सीरत का पावन वर्णन

श्रीमान साम अली नीना साहिब, मार्शल आईलैंड्स का सदस्य, का सद्गति उल्लेख और अनुपस्थित नमाजे जनाज़ा

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 17 अक्टूबर 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

शेष ..

फिर आप अलैहिस्सलाम ने कहा कि "...अल्लाह तआला कहता है: लन तनालुल बिर्रा हत्ता तुनफिकू मिम्मा तुहिब्बून (आल-ए-इमरान:93)। जब तक तुम अपनी अत्यंत प्रिय वस्तुओं को अल्लाह के मार्ग में व्यय नहीं करोगे, तब तक तुम भलाई को प्राप्त नहीं कर सकते।" (मलफ़ूज़ात, खंड 5, पृष्ठ 192, पादटिप्पणी, संस्करण 2022 ई.) और भलाइयों को प्राप्त करने के लिए सहाबा व्यय करते थे।

हज़रत मस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाहु अन्हा बयान करते हैं कि "सहाबा ने कभी-कभी अपने घर का धन-संपत्ति बेचकर युद्ध के व्यय पूरे किए, बल्कि यह भी दृष्टिगोचर होता है कि कभी-कभी उन्होंने अपनी जायदादें बेचकर दूसरों पर व्यय कर दीं और उनके लिए समस्त आवश्यकताएँ उपलब्ध कराईं।" अर्थात, युद्ध पर जाने वालों के लिए। "चुनाँचे, एक बार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बाहर पधारे और आपने कहा कि अमुक यात्रा पर हमारी सेना जाने वाली है, किंतु ईमान वालों के पास कुछ भी नहीं है। क्या तुममें से कोई है जो पुण्य प्राप्त करे? हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहु अन्हा यह सुनते ही उठे और आपने अपनी बचत निकालकर वह राशि मुसलमानों के व्यय के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में प्रस्तुत कर दी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जब यह देखा तो कहा: उस्मान रज़ी अल्लाहु अन्हा ने जन्नत खरीद लिया।"

(खुतबात-ए-महमूद, खंड 19, पृष्ठ 98-99)

हज़रत खलीफ़तुल मसीह अस-सालिस रहमतुल्लाहि अलैहि ने भी आर्थिक त्यागों के संदर्भ में अपने एक उपदेश में इस घटना को इस प्रकार बयान फ़रमाया है कि "एक अवसर पर युद्ध की तैयारी के लिए बहुत से धन की आवश्यकता थी और उन दिनों कुछ आर्थिक तंगी भी थी, और संसार ऐसी ही है। कभी समृद्धि के दिन होते हैं और कभी तंगी के दिन होते हैं। इस अवसर पर भी तंगी के दिन थे और युद्ध की आवश्यकता थी। पैगंबर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा कराम रज़ी अल्लाहु अन्हुम के सामने वास्तविक आवश्यकता रखी और आर्थिक त्याग प्रस्तुत करने की उन्हें प्रेरणा दी। जिसका परिणाम यह हुआ कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ी अल्लाहु अन्हा तो अपना संपूर्ण धन लेकर आ गए। हज़रत उमर रज़ी अल्लाहु अन्हा अपना आधा धन लेकर आए। हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहु अन्हा ने निवेदन किया कि मेरी यह पेशकश स्वीकार कर ली जाए कि मैं दस हज़ार सहाबा रज़ी अल्लाहु अन्हुम का संपूर्ण व्यय वहन करूँगा और इसके अतिरिक्त आपने एक हज़ार ऊँट और सत्तर घोड़े दिए। इसी प्रकार, समस्त निष्ठावान सहाबा ने अपनी-अपनी सामर्थ्य और क्षमता के अनुसार आर्थिक त्याग प्रस्तुत किए और अल्लाह तआला ने इसके उत्तम परिणाम निकाले।"

(खुतबात-ए-नासिर, खंड 2, पृष्ठ 341, जुमे का उपदेश, 18 अक्टूबर 1968 ई. को प्रदत्त)

अल्लाह तआला का बड़ा अनुग्रह है कि अहमदी समुदाय के सदस्य इस बात को समझते हैं कि आर्थिक त्यागों का क्या महत्व है।

मैं अक्सर घटनाओं में बयान करता हूँ। कुछ लोग वास्तव में अपने पास जो कुछ होता है, उसे त्याग देते हैं।

धनवानों को भी, समृद्ध लोगों को भी हज़रत अबू बक्र रज़ी अल्लाहु अन्हा, हज़रत उमर रज़ी अल्लाहु अन्हा और हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहु अन्हा के आदर्श

सामने रखने चाहिएँ और फिर अपने त्यागों के स्तर को बढ़ाना चाहिए।

निर्धन और मध्यम वर्ग के लोग तो शेष त्याग कर रहे होते हैं। अल्लाह तआला के अनुग्रह से बहुत से धनवान ऐसे हैं जो उच्च स्तर का त्याग करने वाले हैं। जो कमज़ोर हैं, उन्हें भी धर्म के प्रचार के लिए आगे आना चाहिए। इस समय में उन्हें भी यह अवसर है कि त्याग करें।

सहाबा रज़ी अल्लाहु अन्हुम ने जहाँ तक संभव था, कुछ न कुछ प्रस्तुत किया और गरीब तथा असहाय सैनिकों के लिए सवारियाँ और तलवारें तथा अन्य युद्ध के उपकरण उपलब्ध कराए। कुछ गरीब सहाबा रज़ी अल्लाहु अन्हुम या सहाबियात रज़ी अल्लाहु अन्हुन्ना जब एक-एक, दो-दो 'मुद्द' अनाज प्रस्तुत करते तो उनके हृदय भर आते कि काश उनके पास अधिक होता तो उसे भी प्रस्तुत कर देते, किंतु कपटाचारी उन पर हँसते और कहते कि क्या यह लोग इन मुट्ठी भर दानों से रोमन सम्राट को पराजित कर देंगे? 'मुद्द' तो एक छोटा सा माप है, मुट्ठी भर के बराबर। इन कपटाचारियों की इस व्यंग्य के बारे में अल्लाह तआला कहता है:

اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِي الصَّدَقَاتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ
اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ۔ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ۔ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ

(अत-तौबा:79)।

अर्थात, वे लोग जो ईमान वालों में से स्वेच्छा से भलाई करने वालों पर दानों के विषय में दोष लगाते हैं और उन लोगों पर भी जो अपने परिश्रम के सिवा अपने पास कुछ नहीं पाते। फिर वे उनका उपहास करते हैं। अल्लाह उनके उपहास का प्रतिफल देगा और उनके लिए पीड़ादायक यातना निर्धारित है।

परिश्रम करके आर्थिक त्याग करने वालों में हज़रत अबू अक़ील रज़ी अल्लाहु अन्हा भी थे, जिन्होंने संपूर्ण रात कुएँ से पानी निकाला और दो 'सा' खजूरें प्राप्त कीं। एक 'सा' लगभग ढाई किलो का होता है, अर्थात कुल पाँच किलो खजूरें प्राप्त कीं। उनमें से एक 'सा' परिवार वालों के लिए रख लिया और एक 'सा' खजूरें, यह त्याग जो वे कुछ कर सकते थे, लेकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हो गए।

(असद अल-ग़ाबा, खंड 6, पृष्ठ 215, अबू अक़ील, दारुल कुतुब अल-इलमिया, 2003 ई.)(अल-लौलु अल-मकनून, सीरत विश्वकोश, खंड 9, पृष्ठ 458, मकतबा दारुस्सलाम)

हज़रत मस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाहु अन्हा ने एक स्थान पर बयान फ़रमाया कि "अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक बार चंदे का अभियान चलाया, तो एक सहाबी ने जाकर कुछ मजदूरी की। संभवतः किसी के कुएँ पर जाकर पानी निकाला और इसके बदले में उसे आधा सेर या तीन पाव अनाज मिला, जिसे उसने लाकर चंदे में डाल दिया। उस समय हज़ारों रुपये की आवश्यकता थी। कपटाचारी हँसते थे और कहते थे कि यह लड़ाई की तैयारियाँ हो रही हैं। यह तबूक के युद्ध की घटना है जो रोमनों से होने वाला था और रोमन साम्राज्य उस समय वैसा ही था जैसा आज अंग्रेज़ी साम्राज्य है।" (जब हज़रत मस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाहु अन्हा ने बयान फ़रमाया, उस समय अंग्रेज़ों का संसार पर राज्य था) "और इतने बड़े साम्राज्य से युद्ध के लिए उस सहाबी ने कुछ मुट्ठीभर जौ लाकर दिए। कपटाचारी इस पर हँसते थे, किंतु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जब इसकी जानकारी हुई तो आपने कहा कि उन्हें क्या ज्ञान है कि अल्लाह की दृष्टि में इस जौ की क्या कीमत है। यही जौ थे जिनसे मुसलमानों को विजय प्राप्त हुई और रोमनों को पराजय हो गई और न केवल रोमनों को, बल्कि ईरानियों को भी, जिनका साम्राज्य भी रोमन साम्राज्य के समकक्ष था, मुसलमानों ने पराजित किया।"

(खुतबात-ए-महमूद, खंड 17, पृष्ठ 46-47)

एक सहाबी रज़ी अल्लाहु अन्हा की एक अद्भुत घटना का भी उल्लेख है। जैसा कि बताया गया है कि इस युद्ध में तैयारी के लिए निष्ठावान सहाबा रज़ी अल्लाहु अन्हुम किसी न किसी प्रकार से यात्रा की तैयारी और आर्थिक त्याग के इस अभियान में सम्मिलित होने के लिए अपनी ओर से प्रयासों में संलग्न थे। धनवान साथी अपना धन-दौलत प्रस्तुत कर रहे थे। गरीब और निर्धन सहाबा रज़ी अल्लाहु अन्हुम परिश्रम-मजदूरी करके जो भी थोड़ी सी मजदूरी मिलती थी, वही प्रस्तुत कर रहे थे। इन परिस्थितियों में एक सहाबी हज़रत उल्बह बिन ज़ैद रज़ी अल्लाहु अन्हा का उल्लेख मिलता है कि उन्होंने अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए एक ऐसा निष्कपट तरीका अपनाया जो अन्य सभी लोगों से निष्ठावान और अनूठा था। वे भी निर्धन और निष्ठावान थे। प्रस्तुत करने के लिए पास कुछ भी नहीं था और न ही इतनी शक्ति थी कि वे धर्मयुद्ध में भाग ले सकते। अतः वे एक रात नमाज़ के लिए खड़े हुए और रोते-बिलखते हुए निवेदन किया: हे अल्लाह! तूने धर्मयुद्ध करने का आदेश दिया है और उसकी प्रेरणा दी है, किंतु मेरे पास कुछ भी नहीं है और तेरे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास भी इतना साज-सामान नहीं है कि वह मुझे प्रदान कर सकें और मैं जाकर लड़ूँ। और तेरे पैगंबर ने आर्थिक त्याग का अभियान चलाया है, मैं उसमें सम्मिलित भी नहीं हो सकता, किंतु मैं अपनी जान, धन और इज्ज़त पर होने वाले प्रत्येक अत्याचार और अन्याय को क्षमा करके वही मुसलमानों पर दान करता हूँ। जब सुबह हुई तो यह अन्य सहाबा के साथ पैगंबर करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा कि आज रात अपनी इज्ज़त का दान करने वाला कहाँ है? कोई खड़ा नहीं हुआ। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पुनः कहा, किंतु कोई खड़ा नहीं हुआ। अंततः हज़रत उल्बह खड़े हुए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को संपूर्ण बात बताई। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा:

اَبْشِرْ فَوَالَّذِىْ نَفْسِىْ بِيَدِهٖ لَقَدْ كُتِبَتْ فِي الزَّكَاةِ الْمُتَقَبَّلَةِ

अबशिर फ़वल्लज़ी नफ्सी बियदिही लक़द कुतिबता फ़िज़्ज़कात अल-मुतक़ब्बला।

अर्थात, शुभ सूचना प्राप्त करो! उस सत्ता की शपथ है जिसके हाथ में मेरी जान है! तुम उन लोगों में लिख दिए गए हो जिनका दान स्वीकार किया गया है।

(अस-सीरत अन-नब्विय्या लि इब्न कसीर, भाग 4, पृष्ठ 9, तबूक युद्ध का उल्लेख..., दारुल मअरिफ़ा, बेरूत, 1976 ई.)(मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत का विश्वकोश, खंड 9, पृष्ठ 463-464, प्रकाशक: बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर)

क्या सुंदर और अनूठी निष्ठा और त्याग की भावना है!

और अल्लाह तआला, जो हृदयों की दशा जानता है और उसे सभी परिस्थितियों का ज्ञान है, उसने भी उनकी यह भावना स्वीकार की और इसकी सूचना अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को भी दी।

स्त्रियाँ भी इस अवसर पर पीछे नहीं रहीं। उन्होंने इस युद्ध की तैयारी के लिए अपने आभूषण प्रस्तुत कर दिए। चुनाँचे, हज़रत उम्म सिनान असलमिया बयान करती हैं: मैंने हज़रत आइशा रज़ी अल्लाहु अन्हा के घर में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने एक कपड़ा बिछा हुआ देखा, जिसमें सुगंध, बाजूबंद, कंगन, कड़े, अंगूठियाँ और पायल भी थीं, जो सभी स्त्रियों ने मुसलमानों के धर्मयुद्ध की तैयारी के लिए दी थीं।

(किताब अल-मग़ाजी, खंड 2, पृष्ठ 380-381, तबूक का युद्ध, दारुल कुतुब अल-इलमिया, बेरूत, 2013 ई.)

बहरहाल, एक ओर तो निष्ठावानों और ईमान वालों की दशा यह थी और दूसरी ओर इस अवसर पर कपटाचारियों ने भी अपनी पूरी शक्ति लगा दी थी और एक दृष्टिकोण से कपटाचारियों की ओर से यह अंतिम चाल और षड्यंत्र था और कपटाचारियों को अपनी सफलता पर पूरा विश्वास था। वे इस विश्वास पर कायम थे कि मुसलman सीरिया की ओर इस लंबी यात्रा पर रवाना होकर रहेंगे और वे इस शैतानी विश्वास पर भी कायम थे कि अल्लाह की शरण, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना नहीं लौट सकेंगे। इसलिए अब उनकी पूरी कोशिश थी कि मुसलमान कम से कम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ निकलें और उनकी सोच के अनुसार मुसलमानों की संख्या जितनी कम हो जाएगी, सेना में उतनी ही छोटी सेना होगी और उस सेना की पराजय और मृत्यु निश्चित होगी। इसलिए उन्होंने वर्तमान परिस्थितियों की कठिनाई और यात्रा की कष्टों और मुश्किलों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना आरंभ कर दिया। वे मुसलमानों को भयभीत करने लगे। विभिन्न बहानों से उन्हें विचलित करते रहे कि वे सम्मिलित न हों, जैसे यह कि इतनी भीषण गर्मी है, यात्रा बहुत लंबी है, यात्रा के साधन बहुत सीमित हैं। मदीना की आबादी का बहुमत कृषि व्यवसायी था, उनकी फसलें तैयार थीं और यह फसलें अकाल के समय में तैयार हो रही थीं। फिर वे मदीना में हर जगह मुसलमानों से यह बातें करते कि तुम लोगों को पता नहीं कि अब जिस सेना का सामना होगा, वह कितनी कठोर और योद्धा है। उनके साथ युद्ध कोई सरल कार्य नहीं है, हम तो तुम सभी को देख रहे हैं कि या तो तुम लोग मारे जाओगे या सभी उनके बंदी बन जाओगे। यह कपटाचारी कहा करते थे। यद्यपि कपटाचारियों के इस प्रचार का उच्च स्तर के और निष्ठावान ईमान वालों पर कोई प्रभाव नहीं हुआ, किंतु कुछ कमज़ोर ईमान वालों के हृदय इतने भयभीत हुए कि वे युद्ध पर न जाने के लिए विभिन्न बहाने और छुटकारे प्रस्तुत करने लगे। हालाँकि ऐसे छुटकारे माँगने वालों में से अधिकांश कपटाचारी ही थे।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 27 November 2025 Issue No. 48

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

क़ुरआन-ए-करीम ने कपटाचारियों के इस प्रचार और बहानों के साथ पीछे रहने का उल्लेख इस प्रकार किया है:

فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ
وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ ؕ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ؕ لَوْ
كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ۔ فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ

फ़रिह अल-मुखल्लफ़ूना बिमक़अदिहिम खिलाफ़ रसूलिल्लाहि व करिहू अन युजाहिदू बि-अमवालिहिम व अनफुसिहिम फ़ी सबीलिल्लाहि व क़ालू ला तनफिरू फ़िल हर्र। क़ुल नारु जहन्नमा अशद्दु हर्रन। लौ कानू यफ़क़हून। फल्यज़हकू क़लीलन व ल्यबकू कसीरन। जज़ाअन बिमा कानू यक्सिबून। (अत-तौबा:81-82)

अर्थात, जो कपटाचारी धर्मयुद्ध से पीछे छोड़ दिए गए, वे अल्लाह के रसूल के आदेश के विपरीत चलकर अपने स्थान पर बैठे रहने पर बहुत प्रसन्न हैं और उन्होंने अपनी जानों और अपने धनों के साथ धर्मयुद्ध करने को बुरा समझा था और एक-दूसरे से कहा था कि इतनी भीषण गर्मी में युद्ध के लिए एकत्रित होकर मत निकलो। तो उनसे कह दो कि नरक की आग उस गर्मी से अधिक कठोर है। काश कि वे समझते! अतः चाहिए कि अपनी इस धोखेबाज़ी पर वे थोड़ा हँसें और अपने कर्म का प्रतिफल पाने पर अधिक रोएँ।

परंपराओं के अनुसार, ये लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित होते और धर्मयुद्ध पर न जाने के लिए कोई न कोई छुटकारा प्रस्तुत करते और उसकी अनुमति माँगते कि हम धर्मयुद्ध पर न जाएँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उन्हें अनुमति दे देते थे। अस्सी से अधिक लोग ऐसे थे जिन्होंने विभिन्न हीलों-बहानों से धर्मयुद्ध पर न जाने की अनुमति प्राप्त की। ये उन कपटाचारियों के अतिरिक्त थे जो अब्दुल्लाह बिन उबय आदि के साथ थे। अल्लाह तआला ने कपटाचारियों के इन सभी बहानों का पर्दाफाश करते हुए क़ुरआन-ए-करीम में खोलकर बता दिया था कि उनका पीछे रह जाना उनके ईमानों की कमज़ोरी के कारण है और ये अपने बहानों में झूठे हैं और क़ुरआन-ए-करीम में जब उनके विषय में आयतें उतरीं तो भविष्य के लिए भी प्रत्येक को चेतावनी दे दी गई कि जब इमाम की ओर से कोई अभियान या आवाज़ उठे तो कैसे हाज़िर कहते हैं। आगे बढ़ना चाहिए और जैसे-तैसे भी हो, उसमें सम्मिलित होने की यथासंभव तैयारी करनी चाहिए। चुनाँचे, अल्लाह जल्ल शानहू फ़रमाता है:

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ؕ
وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ
لَكٰذِبُوْنَ ۔ عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ
الْكٰذِبِيْنَ ۔ لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ
وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ۔ اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ۔ وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ
عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ۔ لَوْ خَرَجُوْا
فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّلَاَاوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَفِيْكُمْ
سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۔ لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ
الْاُمُوْرَ حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ

(अत-तौबा:42-48)

अर्थात, यदि मुनाफ़िकों को कोई निकट का लाभ का सामान मिलता और सुगम यात्रा होती तो वे अवश्य तुम्हारे पीछे चल पड़ते, परन्तु उन पर तो यह मुसीबत दूर-दूर तक पड़ी हुई है और वे अल्लाह की शपथें खाएँगे कि यदि हमें सामर्थ्य होती तो हम अवश्य तुम्हारे साथ निकलते। वे अपनी ही जानों को हानि पहुँचा रहे हैं और अल्लाह जानता है कि वे निश्चय ही झूठे हैं। अल्लाह ने तुमसे क्षमा कर दिया, तुमने उन्हें अनुमति क्यों दे दी? यह तो होना चाहिए था कि जो सच्चे हैं वे तुम्हें स्पष्ट हो जाते और तुम झूठों को भी पहचान लेते। जो लोग अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखते हैं वे तुमसे अपने धनों और अपनी जानों से जिहाद करने की अनुमति नहीं माँगते और अल्लाह डर रखने वालों को भली-भाँति जानता है। तुमसे केवल वही लोग अनुमति माँगते हैं जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान नहीं रखते और उनके दिल संदेह में पड़े हुए हैं, सो वे अपने संदेह में ही डगमगाते रहते हैं। और यदि वे निकलना चाहते तो उसके लिए तैयारी अवश्य करते, परन्तु अल्लाह ने उनके उठ खड़े होने को नापसन्द किया, अतः उसने उन्हें (उदासीनता डालकर) रोक दिया और कहा गया कि बैठे रहने वालों के साथ बैठे रहो। यदि वे तुममें निकलते तो तुम्हारे लिए केवल दुर्गति ही बढ़ाते और तुम्हारे बीच में (फूट डालने के लिए) तेज़ी से दौड़ते-फिरते और तुम्हें फितने में डालना चाहते, हालाँकि तुममें उनकी बात सुनने वाले भी मौजूद हैं और अल्लाह अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है। वे पहले भी फितना चाहते रहे और तुम्हारे लिए मामलों को उलट-पलट करते रहे यहाँ तक कि सत्य आ पहुँचा और अल्लाह का मामला प्रकट हो गया, हालाँकि वे उसे नापसन्द कर रहे थे।

अतः, कपटाचारियों की दशा अल्लाह तआला ने इसमें खोलकर बता दी है और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कहा कि तुमने उनके झूठे छुटकारे को मान लिया। यदि न मानते और अनुमति न देते तो उनकी कपटाचारिता का भांडा सब पर खुल जाता, अवश्य खुल जाता। युद्ध पर तो उन्होंने फिर भी नहीं जाना था, किंतु बहरहाल अल्लाह तआला फ़रमाता है कि उनका न जाना ही उत्तम है, क्योंकि यदि किसी कारण से चले भी जाते तो युद्ध के दौरान ऐसी हरकतें करते जिनसे मुसलमानों को हानि पहुँचनी थी। बहरहाल, उन कपटाचारियों की इच्छा के अनुसार परिणाम प्रकट नहीं हुए।

(अल-लौलु अल-मकनून, सीरत विश्वकोश, खंड 9, पृष्ठ 461-462, मकतबा दारुस्सलाम)(मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत का विश्वकोश, खंड 9, पृष्ठ 474, बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर)

इसकी शेष विवरण भी भविष्य में, इनशा अल्लाह, बयान करूँगा।

मैंने पिछले उपदेश में रबवाह की मस्जिद में हमले का उल्लेख किया था।

जो अहमदी सेवक घायल हैं, उनके लिए प्रार्थना भी करें। अल्लाह तआला सभी को पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करे। अल्लाह तआला उन्हें हर जटिलता से भी बचाए। इस प्रकार की जो घटनाएँ होती हैं, उनके बाद भी कभी-कभी प्रभाव प्रकट होते हैं। इस समय तीन सेवक अधिक घायल हैं और इस कारण अस्पताल में अभी भर्ती हैं और शेष जो पाँच थे, उनका इलाज करके घर भेज दिया गया है, किंतु अभी उनका इलाज भी जारी है और जो घाव हैं, उनके ठीक होने में बहरहाल समय लगेगा।

अल्लाह तआला उन सभी को पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करे और भविष्य में हर बुराई से, हर क्षति से, हर स्थान पर समुदाय के सदस्यों को बचाए।

नमाज़ के बाद एक अनुपस्थिति के लिए मृतक प्रार्थना पढ़ाऊँगा। यह माननीय सैम अली नीना साहिब थे, जो मार्शल द्वीप समूह के निवासी थे। पिछले दिनों उनकी तिरासी वर्ष की आयु में कैलिफ़ोर्निया, अमेरिका में मृत्यु हुई। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। उनका इस्लाम से प्रथम बार परिचय हाफ़िज़ जिब्रील सईद साहिब के माध्यम से हुआ, जो हमारे समुदाय के प्रचारक थे, उनके प्रचार के परिणामस्वरूप 1980 के दशक में हुआ और उस समय उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया, अहमदियत स्वीकार कर ली। बहुत विरोध हुआ, किंतु अत्यंत दृढ़ता के साथ अपने ईमान पर डटे रहे। एक सीनेटर ने संसद में इस्लाम को गैर-कानूनी और आतंकवाद से जुड़ा धर्म घोषित किया, तो आपने अत्यंत साहस के साथ स्थानीय अखबार में संदेश दिया कि हम अहमदी मुसलमान हैं और हमारा आतंकवाद से कोई संबंध नहीं है। आपका यह साहसपूर्ण बयान समुदाय के लिए सशक्तिकरण का कारण बना। उस (सीनेटर) ने तो कोशिश की थी कि कानून पारित करा ले, किंतु बहरहाल आपके प्रयासों से यह नहीं हो सका। आप स्थानीय समाज में प्रभावशाली व्यक्तित्व के रूप में जाने जाते थे।

फ़लाहुद्दीन शम्स साहिब, उप-अमीर अमेरिका, कहते हैं कि मुझे पाँच वर्ष तक मार्शल द्वीप समूह में काम करने का सौभाग्य मिला। मैं वहाँ जाता था क्योंकि यह द्वीपसमूह अमेरिका के अधीन था। सैम साहिब हाफ़िज़ जिब्रील साहिब के माध्यम से अहमदी बने थे। आरंभ में चार-पाँच परिवार अहमदी थे और समुदाय बहुत छोटा

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India.
Editor:Shaikh Mujahid Ahmad